सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण
सह्याद्री पर्वत श्रंखला

पुणे अंचल की तिमाही गृहपत्रिका - अंक मार्च 2021
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के कार्यालयों, शाखाओं एवं स्टॉफ सदस्यों के बीच केवल निजी वितरण हेतु

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

संरक्षक
श्री के. सत्यनारायणन
फील्ड महाप्रबंधक

मार्गदर्शन
श्री सुरेश सालियन, सहायक महाप्रबंधक
श्री मनोज कुमार सिंह, सहायक महाप्रबंधक

परामर्शदाता
मुख्य आंतरिक लेखा परीक्षक
क्षेत्रीय प्रबंधक, अकोला
क्षेत्रीय प्रबंधक, अमरावती
क्षेत्रीय प्रबंधक, औरंगाबाद
क्षेत्रीय प्रबंधक, अहमदनगर
क्षेत्रीय प्रबंधक, जलगांव
क्षेत्रीय प्रबंधक, नागपुर
क्षेत्रीय प्रबंधक, नासिक
क्षेत्रीय प्रबंधक, पुणे
क्षेत्रीय प्रबंधक, सोलापुर

संपादक
श्री राजीव तिवारी,
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपर्क
राजभाषा विभाग
आंचलिक कार्यालय, पुणे
cmhindipunezo@centralbank.co.in
संपर्क – 84088-88775 / 77679-71351

अनुक्रमणिका

क्रम	विवरण	लेखक/रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	एफ.जी.एम. महोदय का संदेश	श्री के सत्यनारायणन	3
2	साइबर अपराध – एक गंभीर चुनौती		4
3	काव्यकुंज		5
4	डिजिटल इंडिया की संकल्पना को साकार करने के लिए डिजिटल बैंकिंग प्रणाली की भूमिका और उसमें भारतीय भाषाओं का महत्व		6
5	अस्तित्व/ प्रतिबिंब		8
6	डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का राष्ट्र निर्माण में योगदान		9
7	अंकेक्षण कार्यक्रम के लाभ		11
8	एनआईडी - विशेष तृतीय पार्टी उत्पादों की महत्वपूर्ण जानकारी		12
9	इच्छाशक्ति		13
10	भारतीय बैंकिंग और विपणन की अवधारणा		15
11	वर्तमान में वित्तीय क्षेत्र के साइबर सुरक्षा खतरे		18
12	प्रगतिवाद में हिन्दी साहित्य, कवि, रचनाएं एवं प्रमुख प्रवृत्तियां – आलेख		19
13	शेगावीचा राणा गजानन		22
14	अंबा देवी नवरात्रि उत्सव		23
15	पुणे अंचल द्वारा आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन – प्रतिवेदन		25
16	बैंकों में बढ़ता एनपीए - कारण एवं निवारण		35
17	*हिन्दी वर्णमाला का क्रम से कवितामय प्रयोग		38
18	राजभाषा संबंधी गतिविधियां		39

खंडन –
इस गृहपत्रिका में सम्मिलित किए गए लेखों में व्यक्त विचार रचनाकर्ताओं के निजी हैं. इनका बैंक से कोई सरोकार नही है.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

पुणे अंचल के फील्ड महाप्रबंधक महोदय का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

पुणे अंचल का फील्ड महाप्रबंधक पदभार संभालने के बाद, मुझे अपने अंचल की ई-पत्रिका **'सेंट सह्याद्रि'** के वर्तमान अंक के माध्यम से अपनी बात कहने का पहला अवसर प्राप्त हुआ है. पिछले तीन माह के अंचल के कार्यनिष्पादन को देखने के पश्चात, मैं निर्धारित सभी व्यावसायिक पैरामीटरों के परिणामों से कतई संतुष्ट नहीं हूं. वर्तमान में अपने समकक्ष बैंकों के कार्यों से यदि हम तुलना करें तो मुझे कहना होगा कि अभी हमें सुनियोजित तरीके से एकजुट होकर कार्य करने की आवश्यकता है. तब शायद हम अपने विनियामक केन्द्रीय बैंक द्वारा हमारे बैंक पर लगाए गए 'पीसीए' के अवरोध से उबर पाएंगे.

हम सभी जानते हैं कि वर्तमान में हमारे बैंक के शीर्ष प्रबंधतंत्र ने प्रशासनिक स्तर पर प्रबल बदलाव किए हैं. आशा है कि इनके लाभ हमें भविष्य में अवश्य मिलेंगे. बैंक के संदर्भ में ये बदलाव इसलिए भी जरूरी थे; क्योंकि बैंक के प्रत्येक क्षेत्रीय कार्यालय के नियंत्रणाधीन शाखाओं की संख्या बहुत अधिक होने के कारण इन पर समुचित रूप से नियंत्रण के साथ-साथ पूरी तरह से इनके मार्गदर्शन एवं दिशानिर्देश में अनेक प्रकार की कठिनाइयां आ रही थीं.

गत तिमाही में हमने अपनी परम्परागत बैंकिंग के साथ-साथ कई ऐसी गतिविधियों से रूबरू हुए हैं, जो कि मानव जीवन के लिए हर दृष्टि से लाभदायक रही हैं; इनमें **'विश्व पर्यावरण दिवस', 'डिजिटल इंडिया डे', 'डॉक्टर्स डे' 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस'** प्रमुख रहे हैं. इन सबके पीछे राष्ट्रीयकृत बैंकों का सामाजिक बैंकिंग करना एक प्रमुख लक्ष्य रहता है. साथ ही, हमने अपने बैंक के संस्थापक सर सोराबजी पोचखानावाला जी की 81वीं पुण्यतिथि पर कृतज्ञ सेन्ट्रलाइट साथियों ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की.

मैं इस बात पर जोर देना चाहूंगा कि हमारे शीर्ष प्रबंधतंत्र द्वारा समय-समय पर विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक अभियान चलाने के निर्देश दिए जाते हैं, यदि हम इनके माध्यम से दिए जाने वाले लक्ष्यों को हासिल करने में असफल रहते हैं अथवा उन लक्ष्यों को शत-प्रतिशत हासिल नहीं कर पाते हैं तो सच मानिये कि हम बैंक की प्रगति सुनिश्चित नहीं कर सकते हैं. इसलिए यह जरूरी है कि हर स्तर पर हमें मुस्तैदी से अपने कार्यों को पूरा करने की जरूरत है. इसलिए मैं आप सबको यह आव्हान करना चाहूंगा कि यह समय की मांग है कि हमारे बैंक की प्रगति सुनिश्चित करने के लिए हमारे शीर्ष प्रबंधतंत्र द्वारा समय-समय पर दिए जा रहे निर्देशों के अनुपालन में कोई कोर-कसर न छोडें.

अंत में, मैं आप सबको आपके कार्यों में आपको अपार सफलता मिले, ऐसी कामना करता हूं.

सस्नेह,

(के. सत्यनारायणन)

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

साइबर अपराध – एक गंभीर चुनौती

कल ही की बात है, कामकाज में बहुत व्यस्त था. ग्राहकों की लंबी कतार लगी थी तबही एक दोस्त का फोन आया उसके खाते से एक लाख रूपये चोरी हो गये. अधिक जानकारी के बाद पता चला कि यह सब हैकिंग की वजह से हुआ है. तब ही सोचा की 'साइबर अपराध एक गंभीर समस्या' बन गई है. यह हमारे लिए बहुत बडी चुनौती बन गई है. साइबर अपराध का अर्थ यह है कि इंटरनेट या कंप्यूटर का प्रयोग करके हेकिंग, चाईल्ड पोनोग्राफी, साइबर स्टॉकिंग, क्रेडिट कार्ड-डेबीट कार्ड फ्रॉड जैसे अपराध करना. साइबर अपराध भी गई प्रकार के है इसमें वाईरस डालना आजकल बहुत खतरनाग और इसका प्रतिशत अधिक है. नए नए अँड्रॉईड मोबाईल फोन बाजार में आ रहे है. नई नई तकनीक से गलत तरीके अपनाकर हर कोई अमीर बनना चाहता है. कोई अपना शैक पुरा करने के लिए चाईल्ड पोर्नोग्राफी जैसे गलत तरीके अपना रहा है. किसी की निजी जानकारी कंप्यूटर से निकाल लेना या चोरी कर लेना भी साइबर अपराध है. जैसे कि हम जानते है कि इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से आजकल धोखाधडी दिन प्रति दिन बढते जा रही है.

इंटरनेट के माध्यम से आपराधिक गतिविधियां भी हम कर सकते है. धोखाधडी क्रेडिट कार्ड या डेबिट कार्ड से भी की जा सकती है. डेबिट कार्ड के हैक होने के कई कारण हो सकते है जैसे कि फोन पर पिन नंबर की जानकारी प्राप्त करना, पिन नंबर चोरी करना. इसलिए डेबिट कार्ड का इस्तेमाल करते समय हमें बहुत सावधान रहना चाहिए. अपना पिन चोरी हो गया तो हमारी मेहनत के पैसे पर पानी फेर सकता है. फिशिंग भी हैकर्स द्वारा इंटरनेट पर नकली वेबसाईट या ई मेल के माध्यम से की जानेवाली धोखाधडी है. इसमें युजर्स का नाम, क्रेडिट कार्ड का विवरण, पिन नंबर जैसी जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है. आशंकित जनता को लुभाने के लिए यह संचार आम तौर पर लोकप्रिय सामाजिक वेबसाईटस्, निलामी साइर्टस्, बैंकों के ऑनलाईन भुगतान, प्रोसेसर या आईटी प्रशासकों के नाम पर किया जाता है. फिशिंग में जाल बनाकर अपनी बहुत सी जानकारी लगातार प्राप्त करने प्रयास हैकर्स करते है जैसे आपका नाम, ई मेल युजर आईडी, पासवर्ड, मोबाईल नंबर, पता, बैंक खाता नंबर, एटीएम नंबर, जन्मतिथि आदि. फिशर्स ने विश्वसनीय डोमेन के साथ दुर्भावनापूर्ण युआरएल को छिपाने के लिए भरोसेमंद संगठनों की वेबसाईटस् पर ओपन यूआरएल रिडायरेक्टर का उपयोग करके हमला करते है. नेट बैंकिंग का हम अभी अधिक उपयोग करते है लेकिन इसका उपयोग करते समय हमें अधिक सावधानी रखनी पडेगी. नेट बैंकिंग का उपयोग करते समय यूआरएल की जांच करना अत्यंत आवश्यक है क्यों कि लगभग 50 प्रतिशत यूआरएल गलत होते है यदि हम इनका प्रयोग करके नेट बैंकिंग करेंगे तो फिशिंग अटैक होकर हमारा खाता हैक हो सकता है. कंप्यूटर वाईरस दुसरे प्रोग्राम के साथ जुडकर काम करता है. यह वाईरस कंप्यूटर को फ्रीज या क्रैश कर देता है. ट्रोजन हॉर्स जैसे प्रोग्राम कंप्यूटर को क्षति पहुंचाने का काम करते है.

साइबर अपराध 2011 से लेकर 2014 तक अत्यधिक मात्रा में भारत में हुए थे. सूचना प्रोदयोगिकी नियम 2000 के अंतर्गत भारत में 2011 से 2014 तक 300 प्रतिशत बढ गए थे. 2015 में भारत में 11592 साइबर अपराध पाए गए. साईबर अपराध की गणना करने के लिए हमारे भारती के कई मुख्य शहरों में साईबर अपराध सेल बनवाए गए किंतू जागरूकता न होने के कारण इसका असर नहीं हुआ. साईबर अपराध करनेवालों को दंड का प्रावधान धारा 66 में किए गया है जैसे कि कंप्यूटर संसाधनों की छेडछाड की कोशिश करनेवालों को धारा 66, साइबर आतंकवाद के लिए दंड का प्रावधान धारा 66 एफ में किया गया है. सेक्स या अश्लिलता के लिए धारा 67-ए. साइबर आतंकवाद के लिए दंड का प्रावधान धरा 66 एफ में है. यदि कोई भारत की एकता, अखंडता, सुरक्षा को भंग करने के लिए किसी कंप्यूटर में वाईरस जैसी कोई ऐसी चीज डालता है या डालने की कोशिश करता है जिससे लोगों की जान को खतरा पैदा होने की आशंका हो तो उसे साईबर आतंकवाद का आरोपी माना जाता है. यदि हम इससे बचने की उपाय योजनाओं की बात करें तो फिशिंग से बचने के लिए हमेशा एड्रेस बार में सही यूआरएल टाइप करके साईट लॉग ऑन करें. अपना युजर आईडी एवं पासवर्ड डालने से पूर्व सुनिश्चित करें कि युआरएल सही है. अपनी व्यक्तिगत जानकारी फोन या इंटरनेट पर केवल तब ही दें जब कॉल करने वाले को आप पुरी तरह जानते हो. यदि हम अपना पासवर्ड गलती से बता भी देते है तो अपना युजर लॉक करें. बैंक को रिपोर्ट करके लॉक करना चाहिए.

सूचना प्रौदयोगिकी नियम 2000 की अधिक जागरूकता करके इसके जो नियम एवं शर्तें है वह अधिक शिथिल करनी चाहिए. अपने क्रेडिट या डेबिट कार्ड की फोन पर किसी को भी जानकारी न दें. अपने डेबिट या क्रेडिट कार्ड का पिन हमेशा बदलते रहना चाहिए. इंटरनेट बैंकिंग का भी प्रयोग करने के बाद तुरंत उससे लॉग आउट करना चाहिए. इसका पासवर्ड भी बदलते रहना चाहिए. इसी प्रकार आजकल वॉटसअप पर भी कोई गलत वीडिओ पोस्ट न करें. फेसबुक का पासवर्ड बदलना चाहिए उस पर कोई भी चित्र, अश्लील चित्र या कोई वेबसाईट जिसका हमें पता नही वह नही खोलनी चाहिए. इस प्रकार हम यदि सावधानियां बरतते है तो हम साइबर अटैक से बच सकते है और साइबर अपराध जैसी चुनौती को हम रोक सकते है.

काव्यकुंज

एक वो दिन

एक वो दिन, जिसके लिए जाने कितने दिन इंतजार किया

एक एक पल, एक एक मिनट जैसे लंबा इंतजार था.

पर वो हर एक पल भावनाओ और खूबसूरत आशाओ से भरा था

कुछ दर्द तो था पर वो भी मीठा सा लगने लगा था.

धीरे धीरे वक्त निकलने लगा और वो एक दिन पास आने लगा.

और जब वो दिन पास आया तब सोचा नहीं था की इतना ज्यादा मुश्किल और दर्द भरा होगा.

एक एक पल जैसे एक दिन के बराबर था, समय तो जैसे आगे बढ़ने का नाम ही नहीं ले रहा था.

और फिर अंततः वह पल आया जिसके लिए मैंने इतना इंतजार किया,

तुझे पाने के लिए फिर से एक नया जन्म लिया.

एक सबसे प्यारा और सबसे खूबसूरत एहसास, माँ बनने का,

जिसने मेरे सारे दुख दर्द भुला दिया.

उस दिन पता चला की माँ बनना कितना सुखद एहसास है.

एक नया किरदार और मेरे जीवन का एक नया पन्ना जिसमे सब कुछ मुझे ही लिखना था,

तू इतना ज्यादा खास हो चुका था मेरे लिए की मैंने खुद को ही भुला दिया था.

हर एक पल मे सिर्फ तू और मैं थे, न जाने मुझे क्या हो गया था जो मेरा सब कुछ तू बन गया था.

शायद यही तो होता है माँ बनने का एहसास जो सभी एहसासों से होता है खास, हर माँ के लिए.

लेकिन पता नहीं था की कभी तेरे बिना भी रहना होगा मुझे,

जीवन समझौतो से भरा है जिसमे तेरे अच्छे के लिए इतना बड़ा समझौता करना पड़ेगा.

मैं ही जानती हूँ एक एक पल, एक एक दिन तेरे बिना कैसे गुजारती हूँ,

अब तो बस तुझसे मिलने के लिए दिन गिनती हूँ और बस उस दिन का इंतजार.

तू भी तो मेरा इंतजार बेसब्री से करता हैं की कब वो दिन आएगा जब हम फिर से होंगे साथ,

भले ही वो कुछ समय के लिए ही क्यूँ न हो.

एक तू ही है जो मेरा अपना है, मेरा सब कुछ है, मेरा ही तो अंश है,

तभी तो तुझे चोट लगने पर दर्द मुझे तुझसे ज्यादा होता है.

दूर रहकर भी जान जाती हूँ तेरी तकलीफ़ों को,

पर तेरी खुशी के लिए सब कुछ कर गुजरती हूँ.

बस अब फिर से उस वो दिन का इंतजार जब फिर कभी न जाना हो मुझे तुझसे दूर.

डिजिटल इंडिया की संकल्पना को साकार करने के लिए डिजिटल बैंकिंग प्रणाली की भूमिका और उसमें भारतीय भाषाओं का महत्व

भारत सरकार ने 'डिजिटल इंडिया अभियान' को पिछले पांच वर्षों से अभूतपूर्व गति प्रदान की है. हमारे प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा उदघोषित डिजिटल इंडिया अभियान की सफलता हेतु ठोस कार्ययोजना के साथ इसे सतत जारी रखा गया है. ज्ञातव्य है कि सरकार द्वारा अपनी भिन्न-भिन्न जन-कल्याणकारी योजनाओं के अंतर्गत देश के विभिन्न पात्र वर्गों को दी जाने वाली सब्सिडी की राशि पूरी तरह से लाभार्थियों को मिले, यह सुनिश्चित करने के लिए इसके तहत, बैंकों में बेसिक बचत बैंक खाता खोलने के लिए असाधारण जग-जागरण अभियान चलाया गया और प्रधानमंत्री जन-धन योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना आदि जैसी अनेक महत्त्वपूर्ण योजनाओं के तहत, बैंकों में करोड़ों की संख्या में खाते खोले गए.

इस सम्बंध में यदि गुजरे जमाने पर नज़र डाले तो हम पाएंगे कि भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने एक बार अपने भाषण में कहा था कि "हम दिल्ली से एक रुपया भेजते हैं तो वह गांवों में पहुंचते-पहुंचते 15 पैसा रह जाता है." इस डिजिटल इंडिया अभियान के अंतर्गत वर्तमान सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि दिल्ली से जब एक रुपया भेजा जाए तो वह गरीब के बैंक खाते में पूरी तरह से एक रुपया ही जमा हो. जन-सामान्य के लिए, डिजिटल इंडिया अभियान का यह सीधा सीधा लाभ है.

एक बार, केन्द्रीय मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद जी ने अपने वक्तव्य में कहा था कि 12 अंकीय यूनिक आइडेंटिफिकेशन नम्बर वाले आधार के साथ, अब 110 करोड़ बैंक खातों में से 76 करोड़ से अधिक बैंक खाते 'आधार' के साथ जोड़े जा चुके हैं. 'आधार' पूरी तरह से सुरक्षित है क्योंकि यह किसी की व्यक्तिगत जानकारी उजागर नहीं करता. डिजिटल इंडिया के लिहाज से यह निश्चय ही सराहनीय कदम है क्योंकि इससे सरकार की योजनाओं के अंतर्गत भारत की अधिकांश आबादी के बैंक खातों में पात्र राशि सीधे जमा हो रही है. इससे जहां एक और कदम-कदम पर बिचौलियों/घूसखोरों की भरमार से लाभार्थियों को संभावित आर्थिक नुक्सान से मुक्ति मिल रही है. वहीं दूसरी ओर; योजनाओं का सही एवं उचित क्रियान्वयन भी संभव हो पा रहा है.

वर्तमान में लगभग सभी भारतीय बैंकों ने अंतर्राष्ट्रीय मानदंड वाली उन्नत सूचना प्रौद्योगिकी को अपनाया है. उनके पास विभिन्न प्रकार के वैकल्पिक डिलेवरी चैनल्स उपलब्ध हैं, जिनके जरिए भारतीय समाज को 'हर जगह, हर कहीं, हर समय' बैंकिंग लेनदेन पूर करना अब सुलभ हो गया है. इनमें आधुनिक एटीएम, आधुनिक क्यिॉस्क मशीनें, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, विभिन्न विशेषताओं से युक्त डेबिट/क्रेडिट कार्डस् आदि शामिल हैं. इन सबके बावजूद भी, परम्परागत बैंकिंग की सुविधाएं जैसे बैंकों की शाखाओं में चैक/ड्राफ्ट की उपलब्धता, शाखाओं में नकदी जमा एवं भुगतान की त्वरित सुविधाएं, आज भी बैंकों के ग्राहकों को बराबर उपलब्ध हो रही हैं.

बैंकों में सीबीएस प्लेटफॉर्म पर कार्यरत कंप्यूटरों से, ग्राहकों को बेहतर ग्राहक सेवा मिल रही हैं. आज बैंक का कोई भी ग्राहक, किसी बैंक की किसी विशिष्ट शाखा का ग्राहक नहीं है, अपितु वह बैंक की सभी शाखाओं का ग्राहक हो गया है. ग्राहक, बैंक की किसी भी शाखा में धन राशि जमा करा सकता है, चैक/ड्राफ्ट जमा करा सकता है और बैंक की किसी भी शाखा से धन आहरण कर सकता है. यही कारण है कि इस डिजिटल बैंकिंग के युग में ग्राहक अब अत्यंत सुलभ एवं आसान सेवाएं बैंकों से प्राप्त कर रहे हैं. चूंकि मौजूदा सरकार डिजिटलीकरण के प्रति काफी गंभीर एवं संवेदनशील है, इसलिए इस दिशा में प्रगति तेजी से होना स्वाभाविक है. वर्ष 2019 के अंत तक देश के तीन लाख से अधिक गांवों में ब्राडबैंड पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है. हमारा देश विश्व का तीसरे नम्बर का देश है, जिसमें लगभग 35.50 करोड़ लोग से अधिक इंटरनेट यूजर्स हैं. इस क्षेत्र के प्रथम दो देश, चीन एवं अमेरिका हैं. गूगल का अनुमान है कि आगामी कुछ वर्षों में ही भारत में इंटरनेट उपभोक्ताओं की संख्या सबसे ज्यादा होगी.

डिजिटल इंडिया की संकल्पना को साकार करने के लिए डिजिटल बैंकिंग प्रणाली.... जारी

डिजिटल इंडिया की संकल्पना को साकार करने के लिए डिजिटल बैंकिंग प्रणाली.... जारी

यहां गौरतलब यह भी है कि भारत एक ऐसा देश है, जिसकी जनसंख्या का 65 प्रतिशत भाग, 35 वर्ष से कम उम्र का है और इस उम्र के युवाओं में तकनीकी शिक्षा ग्रहण करने तथा उसमें नए-नए अनुसंधान करने की तीव्र इच्छा रहती है. इस लिहाज से निश्चय ही भारत डिजिटलीकरण की दिशा में तेजी से अग्रसर होगा, इसमें कोई संदेह नहीं है. सर्वे बताते हैं कि अब विश्व, भारतीय युवाओं के तकनीकी ज्ञान का लोहा मान गया है.

इस सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति के युग में, मोबाइल निर्माताओं ने जबरदस्त क्रांति लाई है क्योंकि मोबाइल केवल बात करने का माध्यम नहीं रह गया है; अब यह आम आदमी की दैनंदिन जिंदगी का परम आवश्यक साधन बन गया है. यह एक बहु-उद्येशीय उपयोगी डिवाइस है, जिसके बगैर आम आदमी अब नहीं रह सकता है. मोबाइल, विशेषकर स्मार्ट फोन डिवाइस से कैमरा, रेडियो, ऑडियो/वीडियो रिकॉर्डिंग, व्यक्तिगत डायरी, केलकुलेटर, घड़ी, इंटरनेट सुविधा, मैसेज भेजने एवं प्राप्त करने का अचूक माध्यम, यूटिलिटी पेमेंट इत्यादि जैसी अनेक प्रकार की सुविधाएं इससे मिल रही हैं. यह एक प्रकार का मोबाइल पी.सी. (कंप्यूटर) है, लेपटॉप है, स्टेनोग्राफर है यानी कुल-मिलाकर यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि अब यह एक 'मिनी ऑफिस' हो गया है. डिजिटल इंडिया की संकल्पना को मोबाइल डिवाइस के द्वारा बड़ी आसानी से पूरा किया जा रहा है. मोबाइल के जरिए, बेसिक बैंकिंग का संपूर्ण कार्य घर बैठे किया जा रहा है. डिजिटल बैंकिंग की सफलता में स्मार्ट मोबाइल सेट की अहम भूमिका हो गई है.

जहां तक सूचना प्रौद्योगिकी में भाषा अथवा भाषाओं के उपयोग की बात है तो इस समूची सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति कके युग में अहम किरदार यद्यपि अंग्रेजी भाषा का है, तथापि, अब विश्व के तमाम देश जो सूचना प्रौद्योगिकी की विभिन्न विधाओं के जनक हैं, निर्माता हैं, अविष्कारक हैं, यह बात भलीभांति समझ चुके हैं कि भारत जैसे विशाल उपभोक्ता बाजार में यदि उन्हें अपना माल बेचना है तो इस डिवाइस को सभी भारतीय भाषाओं में कार्य करने की सुविधा के साथ उपलब्ध कराना होगा. यही कारण है कि विश्व के विकसित देशों द्वारा निर्मित स्मार्ट मोबाइल हैण्डसेटस् में हमारी सभी प्रमुख भाषाओं में कार्य करने की सुविधा विद्यमान हो गई है. बेहतर होगा कि हम सभी भारतीय, तकनीकी के प्रयोग में अपनी भाषाओं का उपयोग करने में स्वयं आत्म-गौरव महसूस करें. अपनी भाषाओं का अधिक से अधिक प्रयोग करें और करवाएं तथा करने वालों की अनुमोदना करें. यदि हम चाहते हैं कि हमारे देश की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी, विश्व-भाषा बने, यह संयुक्त राष्ट्र की भाषा बने, इसे विश्व स्तर पर मान्यता मिले तो सबसे पहले हमें अपनी इस लोकप्रिय भाषा का सर्वाधिक प्रयोग सुनिश्चित करना होगा. इसे वह सम्मान देना होगा, जिसकी कि यह हक़दार है.

यह कहना समीचीन होगा कि डिजिटल इंडिया के सपने को अक्षरश: साकार करने के लिए यह जरूरी होगा कि देश की संपूर्ण सूचना प्रौद्योगिकी, भारतीय भाषाओं की सुविधा से युक्त हो. सर्वेक्षण के आंकड़े वयां करते हैं कि देश की केवल 5 से 6 प्रतिशत जनसंख्या ही अंग्रेजी भाषा का समुचित ज्ञान रखती है; जबकि शेष जनसंख्या अपनी भारतीय भाषाओं का ज्ञान रखती है. इसमें भी, हमारे देश की लगभग 60 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या 'हिन्दी भाषा' का ज्ञान रखती है. इसलिए, यह जरूरी है कि डिजिटल इंडिया की संकल्पना को पूरा करने के लिए, केवल भारतीय भाषाओं का प्रयोग जरूरी है.

इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर हमारी सरकार के साथ-साथ तकनीकी क्षेत्र से जुड़े सभी विद्धानों, वैज्ञानिकों, इंजीनियरों को गंभीरता पूर्वक विचार करना आवश्यक होगा और तदनुसार ठोस कदम उठाने होंगे. कुल-मिलाकर यह तय है कि हमारा देश, डिजिटल इंडिया की संकल्पना को साकार करने के लिए, देश की अर्थव्यवस्था की 'रीढ़ की हड्डी' कहे जाने वाली भारतीय बैंकिंग प्रणाली को डिजिटल बैंकिंग में परिणत करेगा और इसमें भारतीय भाषाओं की जबरदस्त अहम भूमिका होगी. इसमें सबका सहयोग, सकारात्मक दृष्टिकोण और एकमेव देश की प्रगति का लक्ष्य अपना अहम किरदार निभाएगा.

.....

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

कविताएं - प्रशांत डोले, मुख्य प्रबन्धक (विधि)आं.का. पुणे

अस्तित्व !

उम्र का एक एक लम्हा
गुजरता है यूँ ,
जैसे झड़ते हो पत्ते डालियों से.
अंतर्मन मे मौजूद एक बच्चा
जो बेखबर है बदलते वक्त से.
स्थितियाँ बदलती हैं,
परिस्थितियाँ भी.
दीवार पर टंगा कैलेंडर
किया करता हैं साजिशे,
शामिल है हवाएं भी.
मैं मगर बेफिक्र होकर
मौजूद हूँ अपने आप मे,
कि पता है मुझे
पेड़ की पत्तियाँ हूँ मैं,
डाली हूँ और जड़ें भी.
शिशिर भी मैं,
और बसंत भी मैं.

प्रतिबिंब....

अलसाई सृष्टि से
अंधेरे की चादर धीरे धीरे
हटा कर सूरज
जगाने का प्रयास करता है,
ना जागे,
तो तपिश बढ़ाकर आंखे
खोल ही देता है.
चंद्रमा फिक्र करता है,
अपनी अनुपस्थिति से
उत्कंठा पैदा करता है.
फिर रोज खिलते- बढ़ते
हमें पाठ पढ़ाता है.
पूर्ण चंद्रमा को देख
केवल आप ही नहीं,
वह भी खुशियों से भर जाता है.
कौन किसका प्रतिबिंब है,
यह कहना मुश्किल हो जाता हैं.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का राष्ट्र निर्माण में योगदान

(प्रस्तुतकर्ता – तनमय तिवारी आत्मज श्री राजीव तिवारी, आंचलिक कार्यालय, पुणे)

परिचय

डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ था जो उस समय सभी प्रकार के सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक व राजनीतिक अधिकारों से वंचित था. इसके बावजूद भी बाबा साहेब की गिनती दुनिया के सबसे अधिक शिक्षित लोगों में की जाती है. बाबा साहेब के पास अमेरिका, इंग्लैण्ड तथा जर्मनी की उच्च डिग्रियां थीं तथा इंग्लैण्ड से वकालत पास कर स्वतंत्र रूप से बम्बई में वकालत शुरू कर दी. डॉ. अम्बेडकर ने दलितों को "शिक्षित हो, संघर्ष करो और संगठित हो" का नारा देकर मुक्ति का रास्ता दिखाया. उनका शिक्षा प्रचार का कार्यक्रम केवल दलितों तक ही सीमित नहीं था बल्कि उन्होंने सभी वर्गों के लिए उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास किया. डॉ. आंबेडकर ने "पीपल्ज़ एजुकेशन सोसायटी" के माध्यम से मुम्बई में कालेज स्थापित किये जिनमें बिना किसी भेदभाव के सभी को शिक्षा उपलब्ध करायी और जनसाधारण की समस्यायों को सामने रख कर उनमें प्रातः तथा सायंकाल पढ़ाई की व्यवस्था की.

बाबा साहेब ने राष्ट्र के निर्माण एवं भारतीय समाज के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया जिन्हें निम्नानुसार उल्लेखित किया जा रहा है:

1. **स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माण**
   यह सर्वविदित है कि स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माण में बाबा साहेब का महत्वपूर्ण योगदान है. इस से कोई भी इनकार नहीं कर सकता कि आज भारत में यदि लोकतंत्र जीवित है तो वह इस संविधान के कारण ही है. भारत में संसदीय लोकतंत्र और सरकारी समाजवाद की स्थापना में बाबा साहेब का अद्वितीय योगदान है.
2. **राजनीतिक सत्ता में आम-जन की हिस्सेदारी**
   भारत सरकार अधिनियम 1935 लागू होने पर प्रान्तों में विधान सभाएं स्थापित करने एवं स्वराज की पद्धति लागू करने का निर्णय लिया गया तो बाबा साहेब ने राजनीतिक क्षेत्र में दलितों की हिस्सेदारी करने के ध्येय से स्वतंत्र मजदूर पार्टी की स्थापना की तथा उसके झंडे तले 1937 का पहला चुनाव लड़ा. इसमें उन्हें बहुत अच्छी सफलता मिली. इस पार्टी में दलितों के हितों के साथ साथ मजदूर हितों की वकालत भी की गयी थी तथा कई प्रस्ताव रखे गए थे. बाबा साहेब चाहते थे कि मजदूरों को केवल बेहतर कार्य स्थिति से ही संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए बल्कि उन्हें राजनीति में भाग लेकर राजनीतिक सत्ता में हिस्सेदारी प्राप्त करनी चाहिए.
3. **श्रमिक कानून संबंधी कार्य**
   सन 1942 में जब बाबा साहेब वायसराय की कार्यकारिणी समिति के सदस्य बने थे तो उन के पास श्रम विभाग था जिस में श्रम, श्रम कानून, कोयले की खदानें, प्रकाशन एवं लोक निर्माण विभाग थे. श्रम मंत्री के रूप में उन्होंने मजदूरों के कल्याण के लिए बहुत से कानून बनाये जिन में प्रमुख इंडियन ट्रेड यूनियन एक्ट, औद्योगिक विवाद अधिनियम, मुआवज़ा, काम के घंटे तथा प्रसूति लाभ आदि प्रमुख हैं. वर्तमान में जितने भी श्रम कानून हैं उनमें से अधिकतर बाबा साहेब के ही बनाये हुए हैं जिस के भारत का मजदूर वर्ग उनका सदैव ऋणी रहेगा.
4. **बिजली उत्पादन योजनाएं**
   बाबा साहेब यह भी जानते थे कि बिजली के बिना औद्योगीकरण संभव नहीं है. उनका विचार था कि हमें सस्ती बिजली बनानी चाहिए. बाबा साहेब नदियों पर बांध बना कर बिजली पैदा करना चाहते थे. इसी उद्देश्य से उन्होंने दामोदर घाटी योजना, सेंट्रल वाटरवेज़, इर्रीगेशन एंड नेवीगेशन कमीशन की स्थापना की. कालांतर में कई बड़ी बहुउद्देशीय नदी योजनायें बनायीं गयीं जिनसे बिजली के उत्पादन के साथ साथ कृषि सिंचाई एवं बाढ़ नियंतरण में सहायता मिली.

डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का राष्ट्र निर्माण में योगदान.....जारी

डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का राष्ट्र निर्माण में योगदान.....जारी

5. **कृषि भूमि का राष्ट्रीयकरण**

बाबा साहेब भारत की बढ़ती आबादी के कारण उपजी गरीबी, बेरोज़गारी, भुखमरी आदि समस्यायों के बारे में बहुत चिंतित थे. अतः वे खेती को अधिक उन्नत करना चाहते थे. वास्तव में वे इसे उद्योग का दर्जा देना चाहते थे. अतः उन्होंने सम्पूर्ण कृषि भूमि का राष्ट्रीयकरण करके रूस की भांति सामूहिक खेती का प्रस्ताव रखा ताकि कृषि का मशीनीकरण हो सके.

6. **नदी सिंचाई योजना**

बाबा साहेब ने नदियों पर बाँध बना कर उनसे नहरें निकलने तथा बिजली पैदा करने की योजनायें बनायीं थीं. इस प्रकार वे नदियों की बाढ़ से होने वाली तबाही को खुशहाली के साधन बनाना चाहते थे. इसी उद्देश्य से उन्होंने भारत में सर्वप्रथम "दामोदर नदी घाटी" की योजना बनायी जो अमेरिका की "टेनिस वेली अथारिटी" की तरह की थी. इसी प्रकार उन्होंने भारत की अन्य नदियों के जल का उपयोग करने की योजनायें भी बनायीं.

7. **नदी यातायात योजनाएं**

बाबा साहेब नदी यातायात को भी बहुत बढ़ावा देना चाहते थे क्योंकि यह काफी सस्ता है. इसी उद्देश्य से उन्होंने सेंट्रल वाटरवेज़, इर्रीगेशन एंड नेवीगेशन कमीशन (CWINC)की स्थापना भी की थी. वर्तमान मोदी सरकार इसी का अनुसरण कर रही है. बाबा साहेब नदियों में मिटटी भराव के कारण आने वाली बाढ़ को रोकने हेतु अधिक गहरा करने के लिए छोटी एटमी शक्ति का प्रयोग करने के भी पक्षधर थे. इस से हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि कृषि, सिंचाई तथा नदी जल के सदुपयोग के बारे में बाबा साहेब की सोच कितनी आधुनिक एवं प्रगतिशील थी.

8. **परिवार नियोजन योजना**

बाबा साहेब जानते थे कि भारत की निरंतर बढ़ती आबादी राष्ट्र के पिछड़ेपन का कारण है. इसी लिए उन्होंने 1940 में बम्बई एसेम्बली में परिवार नियोजन योजना लागू करने का बिल प्रस्तुत किया था.

9. **दलित नवयुवकों में अनुशासन**

बाबा साहेब ने स्वयं सेवक संघ की तरज पर दलित नवयुवकों का "समता सैनिक दल' बनाया. सन 1942 में उन्होंने इस का बड़ा सम्मलेन भी किया. बाबा साहेब इस के माध्यम से दलित नवयुवकों में अनुशासन, आत्म रक्षा एवं अपने नेताओं की रक्षा करने तथा अत्याचार का विरोध करने की भावना पैदा करना चाहते थे.

10. **शराब बंदी लागू करना**

महिलायों को अपनी मुक्ति और अधिकारों के लिए बाबा साहेब ने अथक योगदान दिया. उन्होंने महिलायों को शराब बंदी लागू करने के लिए संघर्ष करने के लिए भी प्रेरित किया. उन्होंने महिलायों को सलाह दी कि यदि उनका पति शराब पीकर घर आये तो वे उसे खाना न दें. इस से बाबा साहेब की महिलायों की मुक्ति सम्बन्धी चिंता का आभास मिलता है.

11. **हिन्दू नारी का उत्थान**

बाबा साहेब महिलायों के शुद्र होने की स्थिति के कारण व्याप्त दुर्दशा एवं अधोगति से बहुत दुखी थे. अतः वे महिलायों को भी कानूनी अधिकार दिलाना चाहते थे.1952 में जब वे भारत के कानून मंत्री बने तो उन्होंने अथक परिश्रम करके हिन्दू कोड बिल तैयार किया और उसे पास करने हेतु संसद में पेश किया. यही बिल हिन्दू विवाह एक्ट, हिन्दू उतराधिकार एक्ट, हिन्दु स्पेशल मैरेज एक्ट आदि के रूप में 1956 में पास हुआ. इससे स्पष्ट है कि भारतीय, खास करके हिन्दू नारी के उत्थान में डॉ. आंबेडकर का महान योगदान है.

12. **अन्य सामाजिक एवं आर्थिक योजनाएं**

मजदूर वर्ग का कल्याण, बाढ़ नियंत्रण, बिजली उत्पादन, कृषि सिंचाई एवं जल यातायात सम्बंधी योजनाएं तैयार करना था. इसके फलस्वरूप ही बाद में भारत में औद्योगीकरण एवं बहुउद्देशीय नदी जल योजनायें बन सकीं.

उपरोक्त संक्षिप्त विवरण से स्पष्ट है कि बाबा साहेब ने भारत के औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण में जो महान योगदान दिया है उस के लिए भारत उनका हमेशा ऋणी रहेगा.

अंकेक्षण कार्यक्रम के लाभ

प्रस्तुतकर्ता – राजीव तिवारी, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), आंका पुणे

किसी भी संस्था का अंकेक्षण कार्यक्रम अंकेक्षक द्वारा तैयार किया जाता है. परंतु इसका लाभ अंकेक्षक के साथ संस्था के स्वामी व कर्मचारियों को भी प्राप्त होता है. अंकेक्षक कार्यक्रम से प्राप्त होने वाले लाभ निम्नलिखित हैं-

१. **कर्मचारियों में योग्यता अनुसार कार्य विभाजन**

अंकेक्षण कार्यक्रम द्वारा अंकेक्षक अपने स्टाफ के प्रत्येक सदस्य को इस प्रकार का कार्य प्रदान करता है जिसको करने में वह सक्षम है. इस प्रकार कर्मचारियों को कार्य करने में सुविधा होती है तथा उनकी कार्य क्षमता भी बढ़ती है.

२. **उचित नियंत्रण**

अंकेक्षक कार्यक्रम के माध्यम से अंकेक्षक संपूर्ण कार्य पर उचित नियंत्रण बनाए रख सकता है क्योंकि इसके माध्यम से उसे हर समय यह जानकारी रहती है कि अंकेक्षण का कार्य किस अवस्था में चल रहा है.

३. **कार्य में एकरूपता**

किसी अंकेक्षण के लिए एक बार बनाया गया अंकेक्षण कार्यक्रम भविष्य के लिए भी आधार बन जाता है. इससे कार्य में एकरूपता सुनिश्चित हो जाती है.

४. **कार्य प्रगति का अनुमान**

अंकेक्षण कार्यक्रम द्वारा स्टाफ के प्रत्येक व्यक्ति के कर्तव्य स्पष्ट रूप से परिभाषित हो जाते हैं. उन्हें अच्छी तरह पता रहता है कि उन्हें किस प्रकार इस कार्य को किस प्रकार करना है.

५. **न्यायालय में प्रमाण**

यदि किसी कारणवश अंकेक्षक को दोषी ठहराने के लिए नियोक्ता न्यायालय में उसके विरुद्ध लापरवाही का मुकदमा चलाता है तो ऐसी स्थिति में अंकेक्षक लिखित अंकेक्षण कार्यक्रम प्रस्तुत करके सिद्ध कर सकता है कि उसने अंकेक्षण कार्य योजनाबद्ध तरीके से किया है.

६. **समय की बचत**

अंकेक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत किसी भी कार्य को पूरा करने का समय निर्धारित रहता है. अत: कोई भी कर्मचारी निर्धारित समय के अंदर ही अपने कार्य को पूर्ण करने का प्रयास करता है जिससे कार्य में विलंब होने की संभावना नहीं रहती तो समय की बचत होती है.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

एनआईडी - विशेष तृतीय पार्टी उत्पादों की महत्वपूर्ण जानकारी

हम सभी जानते हैं कि वर्तमान युग में व्यवसाय एवं सेवा दोनों क्षेत्रों में गलाकाट प्रतिस्पर्धा विद्यमान है और इसके चलते सभी व्यापारिक संस्थाएं अपने ग्राहकों और संभाव्य ग्राहकों को बेहतर विकल्पों एवं विशेषताओं के साथ अपने उत्पाद एवं सेवाएं प्रदान कर रही हैं. बैंकों में भी आज परम्परागत बैंकिंग के साथ तृतीय पार्टी के उत्पादों की बिक्री का कार्य जमकर किया जा रहा है क्योंकि हमें अपने बैंक की लाभप्रदता के लिए हरसंभव प्रयास करने होंगे. हम आपको इस लेख के माध्यम से अन्य संस्थाओं के कुछ ऐसे और अच्छे उत्पादों की जानकारी दे रहे हैं, जो कि इन संस्थाओं ने खासतौर पर **हमारे बैंक के स्टाफ सदस्यों एवं अपने बैंक के ग्राहकों** के लिए तैयार किए हैं. आइए, हम इनकी जानकरी लेकर इनसे जुड़कर भरपूर लाभ उठाएं.

बजाज एलियांज ग्रुप हॉस्पिटल कैश पॉलिसी

यह बजाज एलियांज जनरल इंश्युरेंस कम्पनी लि. का हमारे बैंक के स्टाफ सदस्यों एवं अपने बैंक के ग्राहकों के लिए बेहतर उत्पाद है. सबसे पहले तो हम ईश्वरीय शक्ति से प्रार्थना करेंगे कि किसी को भी बीमारी, विशेषकर गंभीर बीमारी न हो. परंतु हम सभी जानते हैं कि जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है; रोग भी व्यक्ति को घेरने का प्रयास करते हैं और हम यह भी अपने चारों ओर देख रहे हैं कि अनेक लोग ऐसे हैं जो गंभीर बीमारियों के शिकार हो जाते हैं और फिर इलाज में अपने जीवन भर की कमाई स्वाहा करने के लिए विवश हो जाते हैं. इसलिए बजाज एलियांज की यह पॉलिसी ऐसे समय में बहुत ही फायदेमंद है. इसकी कुछ अन्य विशेषताओं में प्रमुख हैं कि आईसीयू में इलाज के लिए भर्ती होने पर प्रतिदिन निर्धारित राशि का दुगुनी कैश राशि इसमें मिलती है. आयकर की 80डी के अंतर्गत इसका लाभ प्राप्त है. इसकी वार्षिक प्रीमियम राशि भी अन्य बीमा संस्थाओं की तुलना में उम्र के हिसाब से बहुत कम है. इसमें व्यक्ति की उम्र का कोई बंधन नहीं है. तुलनात्मक रूप से अन्य अनेक लाभ हैं. अधिक जानकारी के लिए आप इसकी वेबसाइट को अवश्य देखें और इनके प्राधिकृत अधिकारी से श्री/सुश्री अभिजीत इंदलकर (मो.9930597455) से भी संपर्क कर सकते हैं.

सेन्ट्रल बैंक के ग्राहकों और स्टाफ सदस्यों के लिए बजाज एलियांज ग्रुप हैल्थ प्लान

यह सेन्ट्रल बैंक का अपने ग्राहकों और स्टाफ सदस्यों के लिए बहुत विशेषताओं से युक्त लाभकारी प्लान है. इस उत्पाद का नाम 'ग्रुप एश्युरेंस हैल्थ प्लान' है. इस प्लान के अंतर्गत व्यक्ति को वैयक्तिक एवं उसके परिवार को कवर किया गया है. परिवार में वह स्वयं तथा उसके 3 आश्रित बच्चों और आश्रित माता-पिता अथवा सास-ससुर को शामिल किया गया है. इसके अंतर्गत अस्पतालीकरण पर विभिन्न प्रकार के खर्चों की प्रतिपूर्ति की जाती है. इसको तैयार करने में मार्केट में उपलब्ध अन्य इसी प्रकार के उत्पादों का पूर्णत: अध्ययन किया गया है और फिर इसे मार्केट में लाया गया है. यह स्वाभाविक ही है कि इस प्लान को अधिकांश लोगों द्वारा पसंद किया जा रहा है.

भारतीय जीवन बीमा निगम की 'जीवन शांति' पॉलिसी का नया प्लान

भारतीय जीवन बीमा निगम का यह एक सिंगल प्रीमियम एनुइटी प्लान है. इसके अंतर्गत आपको केवल एक बार ही निवेश करना होता है. यह आपको दो विकल्पों के साथ उपलब्ध है; 1) तत्काल एनुइटी; 2) डेफर्ड एनुइटी. एनुइटी भुगतान की दरें पॉलिसी के आरंभ से ही तय हो जाती है. भारतीय जीवन बीमा निगम के इस उत्पाद को अपने देश में चारों ओर से जमकर प्रतिसाद मिला है. यह उत्पाद सुरक्षा के साथ-साथ बढ़ती उम्र में व्यक्ति को आर्थिक मदद पहुंचाने में अत्यंत ही लाभदायक है. अधिक जानकारी के लिए आप इसकी वेबसाइट को अवश्य देखें और इनके प्राधिकृत अधिकारी से श्री/सुश्री सोरटे (मो. 9890508011) से भी संपर्क कर सकते हैं.

हमें विश्वास है कि यदि आप उपर्युक्त तीनों उत्पादों का अध्ययन करेंगे तो पाएंगे कि वर्तमान समय में ये सभी अत्यंत लाभकारी हैं और फिर आप स्वयं तथा आपके परिवार और आपके परिचितों को इनके बारे में जानकारी देने से आप अपने आपको नहीं रोक सकेंगे. अधिक जानकारी के लिए आप सेन्ट्रल बैंक की वेबसाइट www.centralbank.co.in को अवश्य देखें.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

"इच्छा-शक्ति"

मेजर गीतांजली शर्मा ,सुरक्षा अधिकारी, आंचलिक कार्यालय पुणे

17 सप्टेंबर 2004 मेरे जीवन का एक ऐतिहासिक दिन था.इस दिन मैं सेना मे कमिशन हो कर ऑफिसर के तौर पर सेना का हिस्सा बनी.अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी, चेन्नई से अपनी ट्रेनिंग पूरी कर मैं अपने पहली पोस्टिंग के लिए आसाम मे एक छोटे सी जगह तेज़पुर मे तैनात थी ....पहली बार अपने घरवालो से 2,260 किलोमीटर की दूरी थी और उन्हे मुझ तक पहुंचने के लिए कम से कम तीन दिन का वक़्त लग जाता.

उस दिन रोज़ की तरह मैं सुबह अपने ऑफिस मे अपनी टीम को नियत कामो के लिए नियुक्त कर रही थी, तभी मुझे आर्मी फोन पर सूचना मिली की मेरे घरवाले मुझसे बात करना चाहते है...सुन कर थोड़ा दिल घबराया और कुछ अनहोनी खबर की आहट सी हुई, तुरंत मैंने अपने घर बात करने के लिए अपने वरिष्ठ अधिकारी से मंजूरी ली और आर्मी फोन से अपने घर फोन लगवाया. मेरे बाबा की आवाज़ सुनते ही मुझे डर सा लगा मानो जैसे वो मुझसे कुछ छुपा रहे हो उनकी बहोत कोशिशों के बाद भी मुझे उनकी आवाज़ मे कंपन सी सुनाई दी.बाबा ने मुझे बताया की मेरी माताजी मुंबई के अस्पताल मे भर्ती है. यह सुनकर मैं स्तब्ध रह गई और क्या हुआ होगा इस विचार से भयभीत हो गई पर बाबा से बात करने पर एक ही बात का अंदाज़ा लगा सकी की उन्हे मेरी ज़रूरत है.

ऑफिस में मुझपर पूरी यूनिट की ज़िम्मेदारी थी और उसी वजह से मुझे उस वक़्त तत्काल छुट्टी की मंजूरी मिलना थोड़ा मुश्किल था. तुरंत मैंने अपने वरिष्ठ अधिकारी से छुट्टी के लिए आवेदन किया और उन्होने वक़्त की नज़ाकत को देखकर मुझे अनुमति दे दी, मगर यहाँ मेरे दिक्कतों की शुरूआत थी जहां मुझे छुट्टी मिलने पर भी मेरे पास जाने के लिए टिकिट नहीं था.तेज़पुर मे रेल्वे सुविधा न होने के कारण वहाँ से हमें ट्रेन पकड़ने के लिए गुवाहाटी तक का पाँच घंटे का रास्ता सड़क मार्ग से ही तय पड़ता था.

तेज़पुर से हर महीने की आखरी शनिवार को कोलकता के लिए विमान यातायात की सेवाएँ दी जाती थी और संयोग से वो दिन भी महीने का आखरी शनिवार था.मैं तुरंत विमानतल की ओर निकल पड़ी... उस दिन मेरे वाहन चालक के लिए उसकी गाड़ी चलाने के हुनर को साबित करने की घड़ी थी और उसने वह बेखूबी निभाई. जब हम वहाँ पहुंचे तो विमान रनवे पर उड़ान के लिए तैयार था.वह देखकर मुझे लगा की शायद यह मौका मेरे हाथ से निकल गया.फिर भी मैंने अपनी कोशिश जारी रख, एयरपोर्ट अथॉरिटी के अधिकारियों को जाकर अपनी आपातकालीन परिस्थिति को व्यक्त किया और मेरी मदद करने के लिए उन्होने उस विमान को उड़ान भरने से रोका और मुझे उस विमान तक एयरपोर्ट के वाहन से पहोचाया. विमान ने तेजपुर से कोलकता तक का रास्ता तय कर लिया था और उसके आगे के सफर का विचार मुझे भयभीत कर रहा था ,मेरे पास कोलकता से आगे के सफर की कोई टिकिट नहीं थी और मुझे कोई भी विकल्प नज़र नहीं आ रहा था.तभी मैंने फिर से विमान की टिकिट के लिए कोशिश की मगर मैं असफल रही , और एक बार फिर से एयरपोर्ट अथॉरिटी के अधिकारियों से मदद की गुजारिश की.हालांकि जब मैंने अपना सेना का पहचान पत्र उन्हे दिखाया तो उन्होने कहा की अगर आपने देश की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी ली है तो हम भी आप की सहायता करेंगे और मुझे वैमानिक चालक कक्ष मे बैठकर जाने का विकल्प दिया.उनकी इस मदद के लिए मैं बहोत शुक्रगुजार थी.कोलकता से मुंबई का सफर तयकर मैं आखिर उसी रात को 11 बजे मुंबई पहुंची.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

हॉस्पिटल पहुँचकर अपनी चलती फिरती माँ को जैसे मृत्युशय्या पर देख कर मेरे पैरो तले ज़मीन हिल गई.वह पूरी तरह से वेंटिलेटर पर थी और उन्हे होश भी नहीं था. डॉक्टर ने मुझे बताया की उन्हे गले का कैंसर है और वह लास्ट स्टेज पर डीटेक्ट हुआ है और उन्हे बचाने की कोई उम्मीद नहीं है.यह सुनकर मानो मेरे लिए वक़्त थम सा गया हो और मैं टूट चुकी थी ... बाबा को देखकर मैंने अपनी हिम्मत बांधी और इस तूफान का सामना करने के लिए भगवान से शक्ति मांगी.

डॉक्टर ने हमे सलाह दी की उन्हे कैंसर के इलाज के लिए जो केमोथेरेपी और रेडियेशन करने की ज़रूरत होती है मगर वो नहीं कराये क्यूंकी उससे उनको बहोत तकलीफ होगी और उनके पास सिर्फ दो हफ़्तों का ही वक़्त है.

हमारे लिए यह निर्णय बहोत कठिन हो रहा था ,एकतरफ डॉक्टर की सलाह और माँ को ज़िंदा रखने की चाह मुझे उनको बिना इलाज कराये रखने के लिए मेरा दिल सहमति नहीं दे रहा था आखिर मैंने ठान लिया की मैं अपनी माँ का इलाज कराकर उन्हे अपनी हिम्मत और आत्मबल की मदद से इस जानलेवा बीमारी से लड़ने के लिए उनकी ताक़त बन जाऊँगी.

मैं उन्हे अपने साथ पुणे के सेना अस्पताल लेकर आई और उनका इलाज शुरू किया...कुछ दीनो में ही उन्होने अपनी इच्छाशक्ति से इस बीमारी को मात देने के लिए मेरा साथ दिया और धीरे धीरे उनकी तबीयत मे सुधार होने लगा.वह केमोथेरेपी और रेडिएशन जैसे दर्दनाक इलाज को भी साकारात्मक मनोभाव से लेने लगी ,कुछ दिनो बाद उन्होने अस्पताल से घर ले जाने की इच्छा व्यक्त की और मैंने डॉक्टर की सलाह से उन्हे पुणे के आर्मी क्वार्टर मे अपने साथ रहने ले गई.शुरू मे उनको ऑक्सिजन सिलिंडर के साथ घर में रखना थोड़ा मुश्किल लग रहा था मगर उनकी घर में सबके साथ रहने की इच्छा को पूरा करने की चाह ने मुझे उनके लिए सारी व्यवस्था करने की हिम्मत दी. उन्हे इलाज के लिए अस्पताल ले जाना पड़ता था और उनका मनोबल देखकर डॉक्टर्स भी हैरान थे.

धीरे धीरे वक़्त गुजरता गया और कई बार उनकी तबीयत में उतार-चढ़ाव आता रहता. एक बार उन्हे आईसीयू में भर्ती किया गया और उनकी हालत देखकर डॉक्टर्स ने भी उनको बचाने की उम्मीद छोड़ दी. उसी रात मैं उनका हाथ अपने हाथों मे लिए पूरी रात प्रार्थना करती रही और सुबह उनकी हालत मे सुधार देखकर डॉक्टर्स अचंभित हो गए.तब माँ ने बताया की कोई उन्हे ले जा रहा था मगर मेरी बेटी ने आकार मुझे मौत के मूंह में जाने से बचा लिया.

उस दिन मुझे भगवान या किसी दिव्य शक्ति के होने का एहसास हुआ.जब भी इंसान अपने पूरे दिल से और इच्छाशक्ति से भगवान को कुछ मांगता है तो भगवान को भी उनके सामने झुकना पड़ता है.और इसी इच्छाशक्ति के बल पर मैं और मेरी माँ अपनी ज़िंदगी की यह कठिन लढाई लड़ रहे थे.

इसी बीच मैंने अपनी माँ के सारे सपने पूरे करने का प्राण ले लिया था.उन्हे मुझे दुल्हन के रूप में देखने की इच्छा थी. मेरे साथ पढ़ने वाले से ही मेरी शादी तय हुई थी जो की माँ की तबियत के कारण एक ही दिन मे आर्मी यूनिट के मंदिर में करने का फैसला लिया गया और माँ को सिर्फ कन्यादान के समय पर लाया गया.

जहां हमे डॉक्टर्स ने सिर्फ दो हफ़्तों का समय दिया था वहाँ हमने अपनी इच्छाशक्ति और मनोबल से इस जानलेवा बीमारी से लड़कर 11 महीनो का सफर तय कर लिया था. मैं अपनी माँ को खोना नहीं चाहती थी उसी ज़िद्द में मुझे उनके दर्द का शायद पता ही नहीं लगा. मैंने अपने आप को उनकी जगह रखकर देखा और उस दिन मुझे उनकी तकलीफ और दर्द का एहसास हुआ. जिस दिन मैंने उनके दर्द से गुजरती ज़िंदगी देखकर अपनी हिम्मत हार दी उसी दिन भगवान ने उन्हे उस दर्द से मुक्ति दे दी...

बस...॥....बची है अपनों की यादें॥

हर संभव प्रयास कर ज़िंदगी और वक़्त पर अपने मनोबल और इच्छाशक्ति से मात करने का विश्वास.

भारतीय बैंकिंग और विपणन की अवधारणा

प्राक्कथन

भारतीय वित्तीय क्षेत्र में बैंकिंग एक महत्वपूर्ण अंग है. इसका एक लंबा इतिहास है जो उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (एलपीजी) के बाद विकास के विभिन्न चरणों से गुजरा है. भारतीय बैंकिंग क्षेत्र को मोटे तौर पर अनुसूचित बैंकों और गैर-अनुसूचित बैंकों में वर्गीकृत किया गया है. अनुसूचित बैंक भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 की दूसरी अनुसूची में शामिल हैं. अनुसूचित बैंकों राष्ट्रीयकृत बैंकों में वर्गीकृत किया गया है यथा भारतीय स्टेट बैंक और उसके सहयोगी, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, विदेशी बैंक और अन्य भारतीय निजी क्षेत्र के बैंक, जो भारतीय रिज़र्व बैंक और वित्त मंत्रालय द्वारा नियंत्रित और शासित हैं.

वर्तमान और भविष्य के ग्राहकों की अपेक्षाएं और आवश्यकताएं

वर्तमान में बैंकिंग उद्योग बहुत तेजी से बदलावों के दौर से गुजर रहा है. भारत में जागरूक ग्राहक की जरूरतों को पूरा करने के लिए बैंकिंग क्षेत्र में क्रांति का वातावरण है. ग्राहकों की आवश्यकताएं और मांग अधिक हो गई है और बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने बैंकों को किसी भी अन्य उद्योग की तरह, ग्राहकों को संतुष्ट और आकर्षित करने के लिए मजबूर किया है. आज, ग्राहक जीवन-शैली की बेहतर गुणवत्ता चाहते हैं जिसके लिए वे भविष्य के नकदी प्रवाह के विरूद्ध खरीदारी कर रहे हैं. कैरियर के नए विकल्पों के खुलने से ग्राहकों की आकांक्षाओं में वृद्धि हुई है जिसका एक कारण वेतन में बढ़ोतरी भी है.

बढ़ती हुई मध्यमवर्गीय आबादी, बदलते जनसांख्यिकीय पैटर्न और उभरते हुए मनोवैज्ञानिक परिवर्तन, विकास के प्रमुख चालक होंगे. ग्राहकों की इस प्रतिक्रिया ने बैंकों के लिए एक विशाल व्यावसायिक अवसर उपलब्ध किए हैं. बैंकों ने भी नए उत्पादों, त्वरित और कुशल सेवा और बैंकिंग के नए वितरण चैनलों के साथ अपनी प्रतिक्रियाएं दी है. आज न केवल ग्राहकों के व्यवहार और अपेक्षाओं को समझने की तत्काल आवश्यकता है, बल्कि बैंक को आज के और भविष्य के ग्राहकों के बीच होने वाले मतभेदों की गहरी और गहन समझ की आवश्यकता है. ग्राहक के अनुकूल सेवाओं और उत्पादों की पेशकश करने के लिए, निरंतर आधार पर ग्राहकों की अपेक्षाओं और आवश्यकताओं को समझना आवश्यक है.

प्रतिस्पर्धी परिदृश्य में बैंकिंग सेवाओं का विपणन

फिलिप कोटलर के अनुसार विपणन एक सामाजिक प्रक्रिया और प्रबंधकीय प्रक्रिया है, इस तरह की प्रक्रिया (यानी विपणन) का उपयोग करके व्यक्ति तथा व्यक्तियों के समूह (उदाहरण के लिए, एक संघ या समाज या क्लब) वह प्राप्त करते हैं, जिनकी उन्हें आवश्यकता होती है. वे अन्य के उत्पादों के सममूल्य को निर्माण, पेशकश और आदान-प्रदान के माध्यम से (यानी उनकी ज़रूरतें और इच्छाएं) प्राप्त करते हैं.

फिलिप कोटलर के अनुसार, विपणन प्रबंधन योजना

(i) अवधारणा, और

(ii) मूल्य निर्धारण,

(iii) पदोन्नति

(iv) माल, सेवाओं और विचारों के वितरण को लक्ष्य के साथ आदान-प्रदान करने की प्रक्रिया को क्रियान्वित करने से संबंधित है जो ग्राहकों को संतुष्ट करते हैं और संगठन के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता करते हैं.

विपणन की अनिवार्यत:

आज की प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया में विपणन को एक महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है. उत्कृष्ट विपणन का अर्थ है अनुकूलन करना और बदलना. उत्कृष्ट मार्केटिंग अभ्यास हमें बाहरी प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण के बदलते आयामों के लिए तत्काल प्रतिक्रिया करने में मदद करता है. इसे आज के विश्व में एक संगठन के अभिन्न और अपरिहार्य हिस्से के रूप में परिभाषित किया गया है. कई बार विपणन की क्रियाशीलता गति इतनी तेज हो जाती है कि संगठनों को विपणन वातावरण में चुनौतियों का सामना करना कठिन लगता है. विपणन न केवल निदानकारी उपकरण के रूप में कार्य करता है, बल्कि उत्पन्न समस्याओं के उपाय के रूप में भी कार्य करता है. अगर हम दुनिया के किसी भी शीर्ष संगठन को देखें तो हम विपणन को ही उसकी सफलता का एक अभिन्न अंग के रूप में पाएंगें.

विपणन की रणनीतियां :

बैंक मार्केटिंग कार्यों का समुच्चय है, जो ग्राहकों की वित्तीय जरूरतों और इच्छाओं को पूरा करने के लिए सेवाएं प्रदान करने के लिए निर्देशित किया जाता है, और यह एक तरह से उनके प्रतिस्पर्धी संगठनों (अर्थात अन्य बैंकों) की तुलना में अधिक प्रभावी और कुशलता से संबंधित बैंक के संगठनात्मक उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए किया जाता है. बैंक विपणन विशुद्ध रूप से एक सेवा विपणन है जहां बैंक अपने ग्राहकों को केवल अमूर्त उत्पाद (बैंकिंग सेवाएं) प्रदान करते हैं. हर कोई दिन-प्रतिदिन के जीवन में मार्केटिंग का अभ्यास एक या दूसरे में करता है. विपणन ग्राहकों को समझने, बनाने और बनाए रखने के बारे में है. विपणन की समस्त रणनीतियां यह सुनिश्चित करने के लिए तैयार की जाती है कि ग्राहक अंततः हमारे साथ व्यवहार करें.

विपणन की अवधारणा हेतु विशेष रूप से निम्नलिखित बिंदुओं पर केन्द्रित है जो बैंक की सफलता में योगदान करते हैं:

- हम (बैंक) ग्राहकों के बिना हमारा अस्तित्व नहीं है.
- हमें (बैंक) ग्राहकों को समझना तथा बनाए रखना ही होगा.
- हमें (बैंक) यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ग्राहकों को संतुष्ट करने वाली सेवाओं का प्रदर्शन और वितरण इस प्रकार किया जाए जिससे ग्राहकों को संतुष्टि प्राप्त हो.
- उत्पाद और सेवाओं को इस तरह से निर्मित किया जाना चाहिए कि वे ग्राहकों की सुविधा और आवश्यकताओं के अनुरूप हों.
- बैंक का अंतिम उद्देश्य ग्राहकों की अपेक्षाओं को पूरा करना तथा संपूर्ण संतुष्टि प्रदान करना है.

उपसंहार

दूसरे शब्दों में व्याख्या की जाएं तो ग्राहकों को आकर्षित और संतुष्ट करना ही मार्केटिंग का मूल कार्य है. बैंकिंग क्षेत्र में बढते हुए प्रतिस्पर्धी दबाव, बैंकों को नई विपणन पहलों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है. इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि बैंक से जुड़े सभी कर्मचारियों को विपणन के महत्व को स्वीकार करना चाहिए. बैंकिंग के पुराने तरीके वर्तमान परिदृश्य में लागू नहीं है. ग्राहक की अपेक्षाएँ बदल रही हैं. ग्राहक भी बेहतर सेवाओं की उम्मीद कर रहे हैं. बैंक को ग्राहकों की वित्तीय जरूरतों की पहचान करना और सेवाओं की पेशकश करना है, जो उन जरूरतों को पूरा कर सकते हैं. . वित्तीय सेवा क्षेत्र ने अतीत में कई उथल-पुथल का अनुभव किया है, जिसके परिणामस्वरूप एक पर्यावरण उत्पन्न हुआ जिसे अविनियमन और वैश्वीकरण द्वारा चिह्नित किया गया था. भारतीय बैंकिंग उद्योग संक्रमण के दौर में प्रवाहित है और यह समय की आवश्यकता है कि हम बदलते परिदृश्य के अनुकूल हों.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

वर्तमान में वित्तीय क्षेत्र के साइबर सुरक्षा खतरे

वित्तीय क्षेत्र के लिए साइबर सुरक्षा खतरों संचार और बुनियादी ढांचे की प्रत्येक लहर की वृद्धि के साथ बढ़ रहे हैं यह विशेष रूप से अर्कांसस जैसे राज्यों में महत्वपूर्ण है, जिनके पास निजी क्षेत्र का समर्थन करने या अपराधियों पर मुकदमा चलाने के लिए सीमित क्षमता है.

क्यों वित्तीय क्षेत्र लक्षित है ?

इंटरनेट की स्थापना के बाद से वित्तीय क्षेत्र साइबर सुरक्षा हमलों के लिए जोखिम में है . कंप्यूटर हैकिंग प्रौद्योगिकी में तेजी से बदलाव के कारण पिछले कुछ सालों में यह जोखिम बढ़ गया है. 2015 में बॉट हमलों में काफी वृद्धि हुई है, जिसके परिणामस्वरूप 2015 के दौरान हमलों में 40% वृद्धि हुई थी - और 2015 के पिछले 3 महीनों में 45 मिलियन के एक रिकॉर्ड हुए थे. बॉट हमलों पहले व्यक्तिगत हैकर्स द्वारा विकसित किए गए थे, हालांकि आज वे अक्सर व्यापक रूप से जुड़े हुए हैं, स्वचालित सिस्टम जो ट्रैक और बंद करने के लिए कठिन हैं

एक बुरी स्थिति में, एक बॉट हमले कई दिनों के लिए एक बड़े बैंक को बंद कर सकता था . आधुनिक हमलावर यह सुरक्षा को बायपास करके और वैध ग्राहकों के व्यवहार की नकल कर सकते हैं.

साइबर आक्रमणों का उत्तर

वित्तीय सेवाओं की सूचना साझाकरण और विश्लेषण केंद्र (एफएस-आईएसएसी) "शेल्टर्ड हार्बर" कार्यक्रम के साथ साइबर हमलों के खतरे के खिलाफ तरीके का नेतृत्व कर रहा है. शेल्टर्ड हार्बर एक उद्योग-व्यापी प्रयास है जो पूरे वित्तीय क्षेत्र की सुरक्षा में सुधार करेगा, जब उनके एक साथी वित्तीय संस्थानों पर हमला किया जाएगा. आश्रित हार्बर डेटा वाल्टों बनाता है जहां एन्क्रिप्टेड ग्राहक डेटा को एक घटना के बाद बहाल किया जा सकता है, जो एक वित्तीय संस्थान की सेवाओं का सामना करना पड़ता है ग्राहक को रोक देता है.

वित्तीय संस्थानों के लिए शीर्ष खतरे

वित्तीय संस्थानों को इन आम गलतियों से बचने की सलाह दी जाती है जो तैयार हैकर्स के लिए अवसर पैदा करती हैं:अनएन्क्रिप्टेड डेटा - 2015 में अधिकांश डेटा उल्लंघनों को गलत एन्क्रिप्शन के कारण किया गया था, चोरी होने के बाद चोरी किए गए डेटा को तुरंत एक्सेस किया गया था.

सुरक्षा के बिना नई तकनीक

सीसीटीवी कैमरे, जुड़े कारों, चिकित्सा उपकरणों, और खिलौने सभी बॉट्स में परिवर्तित हो सकते हैं यदि वे असुरक्षित हैं. यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि सिर्फ आपके कंप्यूटर के हार्ड ड्राइव डेटा से आपके साथ समझौता और उपयोग किया जा सकता है

तृतीय पक्ष सेवा

इंटरनेट एक प्राकृतिक संबंधक है, हालांकि असुरक्षित तृतीय पक्ष सेवाएं साइबर हमलावरों के लिए अधिक डेटा प्राप्त करने के लिए दरवाजा खोल सकते हैं. जब आप सेवाओं से जुड़ते हैं, तो बाद में सोचने के बजाय साइबर सुरक्षा एक प्राथमिकता होनी चाहिए .

हैकिंग के नए रूपों के लिए अप्रतिबंधित होने

हैकर्स उपभोक्ता डेटा को न केवल हटाते हैं, वे बाद में उपयोग के लिए इसे बंधक बनाते हैं या पकड़ते हैं. डेटा हटाना एकमात्र तरीका नहीं है कि एक हैकर किसी वित्तीय सेवा से समझौता कर सकता है

असुरक्षित मोबाइल बैंकिंग

जैसे-जैसे मोबाइल बैंकिंग अधिक लोकप्रिय हो जाती है , मोबाइल उपकरणों पर कम जटिल सुरक्षा व्यवस्थाएं विशेषज्ञ हैकर्स के लिए अवसर प्रदान करती हैं. बैंकों और ग्राहकों को सुरक्षित रहने के लिए एन्क्रिप्शन को मोबाइल स्पेस में विस्तार करना चाहिए.

प्रगतिवाद में हिन्दी साहित्य, कवि, रचनाएं एवं प्रमुख प्रवृत्तियां – आलेख

अंग्रेजी में जिस साहित्य को 'प्रोग्रेसिव लिटरेचर' कहते हैं, उसे उर्दू में 'तरक्की' और हिंदी साहित्य में 'प्रगतिशील साहित्य' के नाम से जाना जाता है. प्रगतिशील साहित्य का संबंध हमारे राष्ट्रीय आंदोलन से गहराई से जुड़ा है. आजादी का आंदोलन आधुनिक साहित्य की अब तक की सभी प्रमुख प्रवृतियों को प्रेरित और प्रभावित करता रहा है. प्रगतिवादी साहित्य को हम देशव्यापी आंदोलन भी कह सकते हैं. जिस प्रकार छायावाद द्विवेदीयुगीन स्थूलता के विरुद्ध सूक्ष्म का विद्रोह था, उसी प्रकार छायावादी सूक्ष्मता के विरुद्ध हिन्दी साहित्य में जो प्रतिक्रिया उठी, उसे प्रगतिवाद कहा जाता है . उस समय देश में चारों ओर स्वतंत्रता और परिवर्तन की कामना का ज्वार सा उठा हुआ था. यूरोप में फासीवाद के उभार के विरुद्ध संघर्ष के दौरान इस आंदोलन का जन्म हुआ था और भारत जैसे औपनिवेशिक देशों के लेखकों और कलाकारों ने इसे राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन से जोड़ दिया. हिंदी में प्रगतिशील के साथ – साथ प्रगतिवाद का भी प्रयोग हुआ है. गैर प्रगतिशील लेखकों ने उस साहित्य को जो मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र के अनुसार लिखा गया है प्रगतिवाद नाम दिया है.

प्रगतिवाद का समय

वर्तमान में प्रगतिवाद का समय 1936 ईस्वी से 1943 ईस्वी तक माना जाता है. यूँ तो प्रगतिवाद की गूँज इससे काफी समय पहले से काव्य गद्य, पद्य और काव्यों में मिलती हैं, किन्तु 1936 से 1943 के मध्य का समय ही प्रगतिवाद से सम्बंधित अधिक रचनाओं का रहा.

प्रगतिवाद के प्रमुख कवि

प्रगतिवादी कवियों को हम तीन श्रेणियों में रख सकते हैं :
एक,वे कवि जो मूल रूप से पूर्ववर्ती काव्यधारा छायावाद से संबद्ध हैं, दूसरे वे जो मूल रूप से प्रगतिवादी कवि हैं और
तीसरे वे जिन्होंने प्रगतिवादी कविता से अपनी काव्य-यात्रा शुरु की लेकिन बाद में प्रयोगवादी या नई कविता करने लगे.

पहले वर्ग के कवियों में सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'(विशुद्ध छायावादी), नरेन्द्र शर्मा, भगवती चरण वर्मा, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', डा. हरिवंशराय बच्चन की कुछ कविताएं(हालावादी कवि), बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखन लाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर', उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिंद'(राष्ट्रीय काव्य धारा) आदि हैं, जिन्होंने प्रगतिवादी साहित्य में उल्लेखनीय योगदान दिया. मूल रूप से प्रगतिवादी कवियों में केदारनाथ अग्रवाल, रामविलास शर्मा, नागार्जुन, रांगेय राघव, शिवमंगल सिंह 'सुमन', त्रिलोचन का नाम उल्लेखनीय है. गजानन माधव मुक्तिबोध, अज्ञेय, भारत भूषण अग्रवाल, भवानी प्रसाद मिश्र, नरेश मेहता, शमशेर बहादुर सिंह, धर्मवीर भारती में भी प्रगतिवाद किसी न किसी रूप में मौजूद है,पर इन्हें प्रयोगवादी कहना ही उचित होगा.

इस आलेख में प्रगतिवाद के निम्न कवियों का ही जिक्र किया गया है जिन्होनें अपनी लेखनी से हिन्दी साहित्य को एक अलग पहचान दिलाने में सफल रहे हैं :

1. **शिवमंगल सिंह सुमन**

शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म 5 अगस्त 1915 को उत्तर प्रदेश के उनानो जिले के झगेरपुर में हुआ था. सुमन जी ने मार्क्सवाद से प्रभावित होकर कविता लिखी . सुमन जी की जीवन के गान, प्रलय-सृजन व हिल्लोल आदि काव्य संग्रह हैं .

2. **नागार्जुन**

नागार्जुन का प्रगतिवादी काव्य के साथ अभिन्न सम्बन्ध है . नागार्जुन का जन्म सन् 1911 ईस्वी में बिहार के तरउनी गाँव में हुआ. ये बचपन से ही विद्रोही प्रवृति के थे. इनका बचपन का नाम वैद्यनाथ मिश्र था. इन्होने यात्री नाम से भी कविता लिखी. इनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ युगधारा, प्यासी पथराई आँखें, तुमने कहा था, सतरंगे पंखों वाला, भस्मासुर आदि हैं .

3. **केदारनाथ अग्रवाल**

अग्रवाल जी का जन्म 1911 ईस्वी में बांदा उत्तरप्रदेश में हुआ . उनके चार प्रमुख काव्य संकलन हैं, जिनमें प्रगतिवाद का स्वर प्रखर हुआ है . वे हैं नीर के बादल, फूल नहीं रंग बोलते हैं, युग की गंगा और लोक और अलोक हैं .

4. **रांगेय राघव**

इनका जन्म राजस्थान के बरोली में 1923 ईस्वी में हुआ . इनके प्रमुख काव्य संग्रह अजेय खंडहर, मेधावी और पांचाली हैं

प्रगतिवादी काव्यधारा की **प्रमुख प्रवृत्तियां** इस प्रकार हैं:

सामाजिक यथार्थवाद :

इस काव्यधारा के कवियों ने समाज और उसकी समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है. समाज में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक,धार्मिक,राजनीतिक विषमता के कारण दीन-दरिद्र वर्ग के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि के प्रसारण को इस काव्यधारा के कवियों ने प्रमुख स्थान दिया और मजदूर,कच्चे घर,मटमैले बच्चों को अपने काव्य का विषय चुना.

सड़े घूर की गोबर की बदबू से दबकर, महक जिंदगी के गुलाब की मर जाती है - केदारनाथ अग्रवाल

श्वानों को मिलता वस्त्र दूध,भूखे बालक अकुलाते हैं, मां की हड्डी से चिपक ठिठुर,जाड़ों की रात बिताते हैं
युवती की लज्जा बसन बेच,जब ब्याज चुकाये जाते हैं,मालिक जब तेल फुलेलों पर पानी सा द्रव्य बहाते है
पापी महलों का अहंकार देता मुझको तब आमंत्रण.- रामधारी सिंह दिनकर

मानवतावाद में विश्वास :

प्रगतिवादी कवि मानवता की अपरिमित शक्ति में विश्वास प्रकट करता है और ईश्वर के प्रति अनास्था प्रकट करता है; धर्म उसके लिए नशे के समान है –

जिसे तुम कहते हो भगवान- जो बरसाता है जीवन में रोग,शोक,दु:ख दैन्य अपार उसे सुनाने चले पुकार

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

क्रांति का आव्हान :

प्रगतिवादी कवि समाज में क्रांति की ऐसी आग भड़काना चाहता है,जिसमें मानवता के विकास में बाधक समस्त रूढ़ियां जलकर भस्म हो जाएं ....

देखो मुट्ठी भर दानों को,तड़प रही कृषकों की काया. कब से सुप्त पड़े खेतों से,देखो 'इन्कलाब' घिर आया॥
कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल पुथल मच जाए

शोषकों के प्रति आक्रोश:

प्रगतिवादी कवि दलित एवं शोषित समाज के 'खटमलों'-पूंजीवादी सेठों,साहूकारों और राजा-महाराजाओं–के शोषण के चित्र उपस्थित कर उनकी मानवता का पर्दाफाश करता है-

ओ मदहोश बुरा फल हो,शूरों के शोणित पीने का.देना होगा तुझे एक दिन,गिन-गिन मोल पसीने का॥

शोषितों को प्रेरणा :

प्रगतिवादी कवि शोषित समाज को स्वावलम्बी बनाकर अपना उद्धार करने की प्रेरणा देता है.वह शोषित में शक्ति देखता है और उसे क्रांति में पूरा विश्वास है. इस प्रकार प्रगतिवादी कवि को शोषित की संगठित शक्ति और अच्छे भविष्य पर आस्था है..

मैंने उसको जब-जब देखा- लोहा देखा, लोहा जैसा तपते देखा,गलते देखा,ढलते देखा, मैंने उसको गोली जैसे चलते देखा

रूढ़ियों का विरोध-

इस धारा के कवि बुद्धिवाद का हथौड़ा लेकर सामाजिक कुरीतियों पर तीखे प्रहार कर उनको चकनाचूर कर देना चाहते हैं-

गा कोकिल!बरसा पावक कण, नष्ट-भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन

तत्कालीन समस्याओं का चित्रण :

प्रगति का उपासक कवि अपने समय की समस्याओं जैसे-बंगाल का अकाल आदि की ओर आंखें खोलकर देखता है और उनका यथार्थ रूप उपस्थित कर समाज को जागृत करना चाहता है-

बाप बेटा बेचता है,भूख से बेहाल होकर,
धर्म धीरज प्राण खोकर,हो रही अनरीति,राष्ट्र सारा देखता है

नया सौंदर्य बोध:

प्रगतिवादी कवि श्रम में सौंदर्य देखते हैं. उनका सौंदर्य-बोध सामाजिक मूल्यों और नैतिकता से रहित नहीं है. वे अलंकृत या असहज में नहीं, सहज सामान्य जीवन और स्थितियों में सौंदर्य देखते हैं. खेत में काम करती हुई किसान नारी का एक चित्र इसी तरह का है-

बीच-बीच में सहसा उठकर खड़ी हुई वह युवती सुंदर, लगा रही थी पानी झुककर सीधी करे कमर वह पल भर
इधर-उधर वह पेड़ हटाती,रुकती जल की धार बहाती...

प्रगतिवादी कवि का कला संबंधी दृष्टिकोण भाषा,छंद,अलंकार,प्रतीकों तथा वर्णित भावों से स्पष्ट हो जाता है. वह कला को स्वांत: सुखाय या कला कला के लिए नहीं, बल्कि जीवन के लिए,बहुजन के लिए अपनाता है. वह कविता को जन-जीवन का प्रतिनिधि मानता है.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

शेगावीचा राणा गजानन

गजानन महाराज हे महाराष्ट्रातील एक संत होते. महाराष्ट्रातील शेगाव हे स्थान त्यांच्यामुळे नावारूपाला आले आहे.

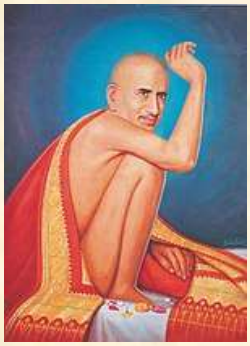

संत गजानन महाराज, शेंगाव.

गजानन महाराजांचे प्रकटीकरण

वऱ्हाडातील शेगाव हे गाव प्रसिद्ध झाले ते श्रीसंत गजानन महाराजांचे पुनीत वास्तव्यामुळे. शेगाव हे बुलढाणा जिल्ह्यातील गाव. सध्या तालुक्याचे ठिकाण असून पूर्वी खामगाव तालुक्यातील प्रमुख शहर म्हणून प्रसिद्ध होते. फार पूर्वी या गावाचे नाव शिवगाव असे होते. पुढे त्याचा अपभ्रंश होऊन 'शेगाव' असे नाव रूढ झाले. संत गजानन महाराज शेगावात माघ महिन्यात वद्य सप्तमी दिवशी भक्तांच्या कल्याणासाठी सर्वप्रथम प्रकटले. तो दिवस होता शके १८०० म्हणजेच २३ फेब्रुवारी १८७८ रोजीचा. श्री. देविदास पातूरकर यांच्या घराबाहेर टाकलेल्या उष्ट्या पत्रावळीतील अन्नाचे कण वेचून खात असताना व गाईगुरांना पिण्यास ठेवलेल्या ठिकाणचे पाणी पिताना ते बंकटलाल अग्रवाल यांना सर्वप्रथम दृष्टीस पडले.
"गण गण गणात बोते" हे अहर्निश त्यांचे भजन चालत असल्यामुळे लोकांनी त्यांना श्री गजानन महाराज हे नाव दिले. सुमारे ३२ वर्षे गजानन महाराजांनी भक्तजनांना या परिसरातून मार्गदर्शन केले. चैतन्यमय देहाने सर्वत्र संचार केला. दिगंबर वृत्तीच्या या अवलिया गजाननांनी विविध चमत्कार करून अनेकांना साक्षात्कार घडविला. त्यावेळी त्यांनी लोकांना भक्तिमार्गाचे महत्त्व पटवून सांगितले. ते सिद्धयोगी पुरुष होते. अद्वैत ब्रह्माचा सिद्धांत महाराजांच्या "गण गण गणात बोते" या सिद्धमंत्रात व्यक्त झाला आहे. ह्या संदर्भात दासगणूंनी लिहिले आहे, "कोण हा कोठीचा काहीच कळेना | ब्रह्माचा ठिकाणा कोण सांगे | साक्षात ही आहे परब्रह्ममूर्ती | आलीसे प्रचिती बहुतांना ||"
महाराजांच्या प्रकटदिनाच्या निमित्ताने शेगाव येथे मोठ्या प्रमाणावर उत्सव साजरा होतो.

शेगावात होणाऱ्या अनेक उत्सवांमध्ये महत्वाचा उत्सव म्हणजे प्रकट दिन उत्सव. या दिवशी महाराष्ट्रातूनच नव्हे तर संपूर्ण भारत वर्षातून भाविक लाखोंच्या संख्येनी महाराजांच्या दर्शनाला येतात. महाराष्ट्राच्या कान्याकोपऱ्यातून वेगवेगळ्या संतांच्या पालख्या प्रकट दिन सोहळ्याच्या निमित्ताने संत नगरी शेगावात दाखल होतात. 'गण गण गणात बोते' च्या आवजाने सर्व आसमंत दुमदुमुन जातो. प्रकट दिन महोत्सव सात दिवसाचा उत्सव असतो. उत्सवामध्ये वेगवेगळ्या कार्यक्रमांची रेल-चेल असते; पारायण, भजन, कीर्तन, भागवत कथा इत्यादी कार्यक्रमांचे आयोजन असते. अगदी पहाटेच्या काकडा आरती पासून रात्रिच्या किर्तनापर्यंत; भक्तिमय वातावरणात संपूर्ण शेगाव नगरी न्हाऊन निघते.

पालखी सोहळा हे प्रकट दिन सोहळ्याचे मुख्य आकर्षण असते. मुख्य पालखी श्री संत गजानन महाराजांची आणि त्या पाठोपाठ इतर संतांच्या पालख्या नगर प्रदक्षणेसाठी सकाळी निघतात. टाळ मृदुंगाच्या गजरात सर्व भाविक दंगून जातात.

दरवर्षी प्रकट दिन सोहळा मोठ्या उत्साहात साजरा केला जातो, शेगावातच नाही तर महाराष्ट्राच्या प्रत्येक शहरात गावात गल्ली-गल्लीत प्रकट दिन साजरा केला जातो एवढंच काय तर अमेरिकेत ही श्री संत गजानन महाराजांचा प्रकट दिन महोत्सव साजरा केला जातो. ह्या निमित्त्य ठीक ठिकाणी सप्ताहाचे आयोजन केले जातात,आणि महाप्रसादाचे वाटप केले जाते.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

अंबा देवी नवरात्रि उत्सव

दैनदिन: सकाळी 5.00 वा. मंदिर उघडून सकाळी 6.00 वा. पूजा अर्चनेस प्रारंभ होतो. दर मंगळवारी , पौर्णिमेस तसेच नवरात्र उत्सवात देवीस दागिने व अलंकाराने सजविले जाते. सकाळी 7.00 वा. दररोज आरती सकाळी 8.15 व सायं. 7.30 (अश्विन ते फाल्गुन) किवा सायं. 8.00 वा . (चैत्र ते भाद्रपद) रात्री 9.45 -शेजआरती व रात्री 10.00 वा. गर्भगृह बंद , मंगळवार व पौर्णिमेस गर्भगृह रात्री 12.30 वा. बंद होते.

चैत्रनवमी उत्सव

चैत्रनवमी उत्सव : चै. शु. प्रतिपदा ते नवमी दररोज देवीस दागिने /अलंकारांनी सजविले जाते सकाळी 10.00 वा. गुढी उभारणे व ध्वजारोहण चैत्रशुद्ध तृतीय : सकाळी यजमानांचे हस्ते संकल्प व सप्तशति पाठ प्रारंभ
चैत्रशुद्ध अष्टमी : सकाळी यजमान / विश्वस्त यांचे हस्ते होम हवन केले जाते व पूर्णाहुती नंतर महाप्रसाद वितरण करण्यात येतो .

प्रगट दिन

श्री एकवीरा देवी संस्थांनातर्फे मंदिराच्या जिर्णोद्धाराचे काम सुमारे 20 वर्षापूर्वी सुरू केले गेले . निधीच्या उपलब्धते नुसार तसेच वेळोवेळी बांधकामात येणाऱ्या अडचणी दूर करून काम अंतिम टप्प्यात पोहचले होते . बाहेरचा सभामंडप जवळपास पूर्ण झाला आणि गर्भगृहाच्या कामास वेग आला होता, कारण नवरात्र उत्सव तोंडावर होता.सध्याच्या जुन्या पिढीला आणि त्यापुर्वीच्या अनेक पिढ्यांना श्री एकवीरा देवीच जुनं रूप आठवत असेल, ते म्हणजे सुमारे दोन फूट व्यासाचा शेंदूर माखलेला चेहरा (तांदळा). मात्र इस 2013 साली भाद्रपद शुद्ध द्वितीयाला सकाळी गर्भगृहाच्या भिंतीचे काम सुरू करण्यात आले आणि अचानक मातेचा तांदळा मूळ मुर्तीपासून पूर्णपणे सुटून वेगळा झाला आणि श्री एकवीरा देवी आपल्या मूळ रूपात प्रगट झाली. सगळे उपस्थित द्विमुढ झाले . हजर असणाऱ्या विश्वस्तांनी ही घटना सगळ्या जबाबदार मंडळींना (जिल्हाधिकारी सहीत)कळवली. काही काळ दर्शन व्यवस्था बंद करून आणि सबंधित अध्यात्मिक जाणकार व तज्ञ यांच्या समवेत संपर्क साधला आणि पुढील रूपरेषा ठरविण्यात आली. देवीचा मुख्यवटा (तांदळा) सुमारे 1.75 फूट व्यासाचा असून त्याची जाडी अदमासे 1.5 फूट होती. त्याचे नंतर बारकाईनं निरिक्षण केलं असता तांदळा शेंदुराच्या अनेक थरांची तयार झाल्याचे आढळून आले . तसेच सदर थरां मधून किमान आठ डोळ्यांचे जोड निघाले . प्रकट झालेल्या मुर्तीची साग्रसंगीत पूजा आणि सफाई केल्यानंतर अगदी आश्चर्यकारक आणि अकल्पित स्वरुप समोर आले. सदर मुर्तीनुसार ही देवी सुखासनात बसलेल्या रुपात असून चार हस्त असणारी आहे. दोन हातात आयुधे असून दोन हातात शृंगार साधनं आहेत.

मुर्तीची तत्कालीन पुजा अर्चना पद्धत आणि शेंदूर फासण्यामूळे थोडी झीज झाल्याचे आढळून आले. तात्कालिन म्लेंछ राजवटीत सदर मुर्तीचा बचाव करण्यासाठी आणि पुजा पध्दतीने मुळ स्वरुप लोप पाउन हळुहळू तांदळा स्वरुप प्राप्त झाले असावे आणि मुळ स्वरुप काळाच्या ओघात विस्मृतीत गेल असाव.
या विषयी तज्ञांचे मार्गदर्शन घेण्यात येऊन सदर मुर्तीस वज्रलेपन करुन सूस्थितीत प्रस्थापित करण्याचा निर्णय घेण्यात आला. या कामासाठी पूणे येथील या विज्ञानाचे तज्ञ श्री गो. बा. देगलूरकर (फर्ग्युसन कॉलेज, पुरातत्त्व तज्ञ) यांची सेवा घेण्यात आली.त्यांनी केलेल्या अभ्यासानुसार सदर मुर्ती ज्या पद्धतीने घडवली आहे त्यानुसार देवी पार्वती स्वरुपात असून सुमारे 800 वर्षापूर्वी तयार करण्यात आली असावी.

अश्विन शारदीय नवरात्र

अश्विन शारदीय नवरात्र : देवीचा हा महत्वपूर्ण उत्सव असून उत्सवाचा प्रारंभ घटस्थापनाने पासून होतो. सकाळी 4.00 ते 6.00 पर्यंत अभिषेक 6.30 ते 8.00 षोडशोपचार पूजा व अर्चना सकाळी 8.00 ते 10.00 घटस्थापना व शृंगार आरती तसेच ध्वजारोहण. दुपारी 12.00 नैवेद्य महाप्रसाद आरती
अश्विन पंचमी : सुमारे 1500 सुवासिनींना महाप्रसादाची ओटी दिली जात.
अष्टमी: 18 कुमारिका पूजन,
नवमी : देवीचे व श्री जनार्दन स्वामींचे हवन सपतत्रिक यजमान करतात. त्यानंतर पूर्णाहुती व महाप्रसाद असतो. अश्विन शुद्ध दशमी : श्री आंबादेवी व श्री एकविरादेवी ची पालकी सीमोल्लंघनाला निघते.
अश्विन शुद्ध द्वादशी किंवा पौर्णिमा : देवीला लघुरुद्र आणि भक्तांना महाप्रसाद दिला जातो.
संपूर्ण नवरात्री उत्सवात विविध धार्मिक कार्यक्रम जसे कीर्तन, भजन, प्रवचन, गायन इत्यादी साजरे केले जातात.

कार्तिकउत्सव

कार्तिकउत्सव : अश्विन शुध्द द्वितीय ते कार्तिक वध्य द्वितीया या कालावधीत दररोज सकाळी 6.00 काकड आरती असते. कार्तिक वध तृतीया या दिवशी देवीची प्रक्षाळ पूजा दुपारी 2.00 वाजता नंतर महाप्रसाद असतो. अश्विन अमावस्येत लक्ष्मीपूजन केले जाते.

प. पु. श्री जनार्दन स्वामी महाराज पुण्यातिथी उत्सव
प . पू. श्री जनार्दन स्वामी महाराज पुण्यातिथी उत्सव : कार्तिक वध्य चतुर्थी ते द्वादशी पर्यंत उत्सव साजरा केला जातो. उत्सवामध्ये पारायण, भजन, कीर्तन, भागवत कथा इत्यादी कार्यक्रमांचे आयोजन असते. द्वादशीस सकाळी 10.30 ते 12.00 पर्यंत समाराधना होते . दुपारी 4.00 वाजता भव्य शोभायात्रा मंदिराच्या प्रमुख्य मार्गवरून निघते. सायं. 7.00 वाजता मंदिरात समाधीपाशी आरती नंतर समाप्ती व महाप्रसाद होतो.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

सम्मेलन प्रतिवेदन

अखिल भारतीय डिजिटल राजभाषा सम्मेलन, पुणे अंचल

15.03.2021 (सोमवार)

अधिष्ठापन एवं व्याख्यान सत्र – कार्यसूची

समय	कार्यक्रम	संचालक/वक्ता
11.00-11.10	कार्यक्रम का शुभारम्भ, दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण	माननीय फील्ड महाप्रबंधक एवं सहायक महाप्रबंधक गण
11.10-11.15	कार्यक्रम की रूपरेखा एवं अतिथियों का परिचय	श्री राजीव तिवारी, मुख्य प्रबंधक– राजभाषा
11.15 -11.25	स्वागत संबोधन	श्री के सत्यनारायणन, फील्ड महाप्रबंधक, पुणे
11.25-11.30	अतिथि वक्ता परिचय	श्री राजीव तिवारी, मुख्य प्रबंधक– राजभाषा
11.30-12.00	व्याख्यान विषय – हिन्दी का भविष्य एवं भविष्य की हिन्दी	प्रो. केशरी लाल वर्मा कुलपति, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)
12.00-12.05	अतिथि वक्ता परिचय	श्री राजीव तिवारी, मुख्य प्रबंधक– राजभाषा
12.05-12.35	व्याख्यान विषय – हिन्दी भारतीय संस्कृति की संवाहक	प्रो. बलदेव भाई शर्मा कुलपति, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)
12.35-12.45	मुख्य अतिथि संबोधन	सुश्री सुष्मिता भट्टाचार्या उपनिदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम) राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय
12.45-12.50	वर्ष 2020-21 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु कार्मिकों का सम्मान	
12.50-12.55	केन्द्रीय कार्यालय मार्गदर्शन	श्री राजीव वार्ष्णेय राजभाषा प्रमुख, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, केन्द्रीय कार्यालय, मुम्बई
12.55-13.00	आभार प्रदर्शन	श्री मनोज कुमार सिंह, सहायक महाप्रबंधक,पुणे
प्रथम सत्र समाप्त		

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय,पुणे द्वारा दिनांक 15 मार्च, 2021 को अखिल भारतीय राजभाषा ई-सम्मेलन का आयोजन वर्चुअल माध्यम से किया गया. यह सम्मेलन केन्द्रीय कार्यालय के निर्देशानुसार एवं गृह मंत्रालय की अपेक्षाओं तथा गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित किया गया. इस ई-सम्मेलन का पूर्ण कार्यक्रम इस रिपोर्ट के प्रारंभ में दिया गया है.

यह सम्मेलन दो सत्रों में विभाजित किया गया था. जिसमें प्रथम सत्र अधिष्ठापन एवं व्याख्यान सत्र था जिसमें अतिथि वक्ताओं को आमंत्रित किया गया था एवं द्वितीय सत्र प्रशिक्षण एवं उपसंहार सत्र था जिसमें प्रमुख विषयों में "ज्ञानार्जन केन्द्रों में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन', 'राजभाषा कार्यान्वयन में सामान्य कठिनाईयां', 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति संचालन संबंधी आवश्यक दिशानिर्देश', 'भाषा एवं साहित्य का संबंध' एवं 'डिजिटल माध्यमों में हिन्दी की बढ़ती प्रासंगिकता' सम्मिलित किए गए.

अखिल भारतीय डिजिटल राजभाषा सम्मेलन, पुणे अंचल

15.03.2021 (सोमवार)

प्रशिक्षण एवं उपसंहार सत्र – कार्यसूची

समय	कार्यक्रम	संचालक/वक्ता
14.30-14.45	ज्ञानार्जन केन्द्रों में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन	सुश्री स्मिता वारजिभे, वरिष्ठ प्रबंधक, आंचलिक ज्ञानार्जन केन्द्र पुणे
14.45-15.00	राजभाषा कार्यान्वयन की सामान्य कठिनाइयां	सुश्री वृषाली देवरे, सहायक प्रबंधक –राजभाषा, क्षे का पुणे
15.00-15.15	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति संचालन संबंधी आवश्यक जानकारियां	सुश्री आरती मेतकर, सहायक प्रबंधक –राजभाषा, क्षे का अकोला
15.15-15.30	अल्प विराम	
15.30-16.00	भाषा एवं साहित्य का संबंध	श्री चंद्रकांत जैन, वरिष्ठ प्रबंधक –राजभाषा, क्षे का नागपुर
16.00-16.30	डिजिटल माध्यमों में हिन्दी की बढ़ती प्रासंगिकता	श्री राजीव तिवारी, मुख्य प्रबंधक– राजभाषा, आंचलिक कार्यालय पुणे
16.30-16.55	केन्द्रीय कार्यालय मार्गदर्शन एवं अपेक्षाएं	श्री राजीव वार्ष्णेय राजभाषा प्रमुख, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, केन्द्रीय कार्यालय, मुम्बई
16.55-17.00	आभार प्रदर्शन	सुश्री अर्चना वाल्दे, मुख्य प्रबंधक- मानव संसाधन विकास, आंचलिक कार्यालय पुणे
डिजिटल राजभाषा सम्मेलन समाप्ति की औपचारिक घोषणा		

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

प्रथम सत्र (अधिष्ठापन सत्र)

अखिल भारतीय राजभाषा ई- सम्मेलन का प्रारंभ बैंक की परंपरा के अनुरूप बैंक के संस्थापक सर सोराबजी पोचखानावाला के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन से हुआ. फील्ड महाप्रबंधक श्री के.सत्यनारायणन द्वारा दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का विधिवत उदघाटन किया गया. इस कार्यक्रम के उदघाटन सत्र में आंचलिक कार्यालय के समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दीप प्रज्जवलन के पश्चात फील्ड महाप्रबंधक श्री के.सत्यनारायणन द्वारा उपस्थित स्टाफ सदस्यों सहित वर्चुअल रूप से जुड़े सभी अतिथियों का आंचलिक कार्यालय,पुणे की ओर से स्वागत किया. फील्ड महाप्रबंधक श्री के.सत्यनारायणन द्वारा विशेष रूप से इस सम्मेलन में वर्चुअल रूप से जुड़े अतिथि वक्ताओं डा. केशरी लाल वर्मा,माननीय कुलपति, रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़), डा. बलदेव भाई शर्मा, माननीय कुलपति, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) का स्वागत किया तथा आंचलिक कार्यालय द्वारा प्रमुख वक्ताओं के व्यक्तित्व पर तैयार किए गए ब्रोशर का विधिवत् विमोचन किया.

फील्ड महाप्रबंधक श्री के.सत्यनारायणन ने क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम), गृह मंत्रालय,राजभाषा विभाग की उपनिदेशक डॉ.सुस्मिता भट्टाचार्य एवं केन्द्रीय कार्यालय, राजभाषा विभाग के प्रभारी श्री राजीव वार्ष्णेय सहित पूरे भारत के विभिन्न आंचलिक कार्यालयों एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में पदस्थ राजभाषा अधिकारियों का भी इस ई- राजभाषा सम्मेलन में स्वागत किया.

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

अतिथियों के स्वागत के पश्चात मुख्य प्रबंधक-राजभाषा श्री राजीव तिवारी द्वारा सभी उपस्थित स्टाफ सदस्यों को अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के कार्यक्रम की रूपरेखा एवं व्याख्यान सत्र के अतिथि वक्ताओं का परिचय दिया.

कार्यक्रम की रूपरेखा एवं अतिथियों के औपचारिक परिचय के पश्चात अधिष्ठापन सत्र के प्रमुख अतिथि डा. केशरी लाल वर्मा,माननीय कुलपति, रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) एवं डा. बलदेव भाई शर्मा, माननीय कुलपति, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) जैसे ओजस्वी वक्ताओं के विचारों का लाभ लेने के लिए उनके उदबोधन हेतु आमंत्रित किया गया.

अतिथि वक्ता

प्रो. केशरी लाल वर्मा

विषय – हिंदी का भविष्य एवं भविष्य की हिंदी

समय – 11.30 am से 12.00 pm तक

प्रो. बलदेव भाई शर्मा

विषय – हिंदी भारतीय संस्कृति की संवाहक

समय – 12.00 pm से 12.30 pm तक

सर्वप्रथम डा. केशरी लाल वर्मा,माननीय कुलपति, रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) ने 'हिन्दी का भविष्य और भविष्य की हिन्दी' विषय पर वर्चुअल रूप से गूगल मीट एवं यू-ट्यूब से जुड़े लगभग 180 श्रोताओं को संबोधित किया.

इसके उपरांत डा. बलदेव भाई शर्मा, माननीय कुलपति, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) ने 'हिन्दी भारतीय संस्कृति की संवाहक' विषय पर अपनी अदभुत संवाद शैली में तार्किक एवं ज्ञान से परिपूर्ण अपने ओजस्वी बौद्विक से सरलतापूर्वक संदेश दिया.

डा. केशरी लाल वर्मा,माननीय कुलपति, रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) एवं डा. बलदेव भाई शर्मा, माननीय कुलपति, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) के उदबोधन के पश्चात केन्द्रीय कार्यालय, राजभाषा विभाग के प्रभारी श्री राजीव वार्ष्णेय जी ने भी सभी उपस्थित स्टाफ सदस्यों एवं वर्चुअल रूप से जुड़े सभी वक्ताओं एवं समस्त राजभाषा अधिकारियों का केन्द्रीय कार्यालय, राजभाषा विभाग की ओर से स्वागत किया एवं कार्यक्रम आयोजन एवं सफलता हेतु शुभकामनाएं प्रेषित की.

इस सत्र के समापन करते हुए आंचलिक कार्यालय के सहायक महाप्रबंधक श्री मनोज कुमार सिंह ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया एवं गूगल मीट और यू-टयूब के माध्यम से जुड़े अधिकारी, कर्मचारी एवं अन्य सभी सहभागी सदस्यों को उनकी उपस्थिति हेतु विशेष धन्यवाद दिया.

सम्मेलन की विशिष्टता एवं सहभागिता

सम्मेलन में सहभागिता हेतु माध्यम	सहभागिता संख्या
भौतिक रूप से	35
वर्चुअल रूप से गूगल मीट पर	82
यू-ट्यूब के माध्यम से	77
गूगल फार्म के माध्यम से पंजीकरण	199
सहभागिता प्रमाणपत्र जारी	199

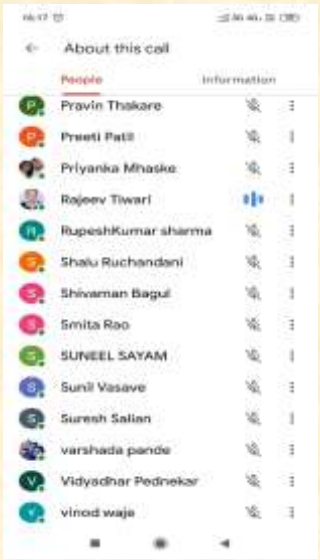

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

वित्तीय वर्ष 2020-21 के दौरान पुणे अंचलाधीन क्षेत्रों में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन करने वाले कार्मिकों की सूची

उपरोक्त सभी कार्मिकों को राजभाषा उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु पुणे अंचल के माननीय फील्ड महाप्रबंधक द्वारा हस्ताक्षरित सराहना प्रमाणपत्र प्रदान किए गए.

कार्मिक का नाम	पदनाम	कर्मचारी संख्या	पदस्थापना
सुश्री प्रतिभा बडुरकर	मुख्य प्रबंधक	064479	क्षेत्रीय कार्यालय, सोलापुर
श्री हरिदास दरेकर	प्रबंधक	129369	क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे
श्री प्रमोद द. बोरकर	सहायक प्रबंधक	124579	क्षेत्रीय कार्यालय अहमदनगर
श्रीमती यामिनी देसाई	सहायक प्रबंधक	126968	क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर
श्री रूपेश कुमार शर्मा	मुख्य प्रबंधक	083698	क्षेत्रीय कार्यालय जलगांव
श्री भूषण जोशी	सहायक प्रबंधक	066307	क्षेत्रीय कार्यालय नासिक
श्री प्रज्योत हिबारे	सहायक प्रबंधक	133244	क्षेत्रीय कार्यालय अकोला
श्री रूपेश फुलझेले	सहायक प्रबंधक	125962	क्षेत्रीय कार्यालय अमरावती
श्री बैजनाथ प्रसाद	मुख्य प्रबंधक	083806	क्षेत्रीय कार्यालय औरंगाबाद

प्रशिक्षण एवं उपसंहार (द्वितीय सत्र)

'डिजिटल माध्यमों में हिन्दी की बढ़ती प्रासंगिकता'

आंचलिक कार्यालय के मुख्य प्रबंधक श्री राजीव तिवारी ने कोविड–19 के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के ऑन लाइन आयोजन को चिन्हित किया जो पुणे अंचल में चल रहे राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति सतत प्रयासों को परिलक्षित करता है. श्री तिवारी ने आत्मनिर्भर भारत अभियान में डिजिअल संसाधनों के विकास पर प्रकाश डाला तथा बताया कि केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने विविध सरकारी कार्यक्रमों जैसे दीक्षा, स्वयं, स्वयं प्रभा, शिक्षा वाणी, साईन लैग्वैंज आदि सरकारी कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा की पहुंच को सहज और सशक्त किया है.

इसी प्रकार बैंकों में कैशलैस बैंकिंग जैसे IMPS/NEFT/RTGS/UPI आदि के प्रयोग से करेंसी नोटों के प्रचलन को सीमित किया गया. ऑनलाईन/डिजिटल बैंकिंग के जरिए ग्राहकों को घर बैठे बैंकिंग सुविधाएं प्रदान की गई. बैंक के मोबाईल एप्प का प्रयोग अप्रत्याशित रूप से बढ़ा है. शाखाओं में हिन्दी के प्रयोग को सुनिश्चित करने के लिए आसान टिप्स दी गई तथा राजभाषा निरीक्षणों के दौरान जांच की जाने वाली विविध मदों पर जानकारी दी गई.

श्री तिवारी ने बैंक में प्रयोग हो रहे सॉफ्टवेयर में हिन्दी का प्रयोग एवं हिन्दी में विभिन्न रिपोर्टो का सृजन, हिन्दी में पासबुक प्रिंटिंग जैसी अनेक राजभाषा एवं तकनीक से संबंधित बातों को विस्तार से बताया. उन्होनें बैंक इंट्रानेट पर हिन्दी के प्रयोग से सबंधित पावर पॉइन्ट प्रेजेन्टेशन प्रस्तुत किया जिसमें हर चरण को बहुत ही साधारण तरीके से समझाया गया था. यूनिकोड पर भी अपने विचार एवं प्रयोगों को बताया. कम्प्यूटर पर हिन्दी का प्रयोग कितनी आसानी से किया जा सकता है, इस संबंध में प्रेजेन्टेशन प्रस्तुत किया गया. श्री तिवारी द्वारा सभी से राजभाषा के कार्य को और आगे बढ़ाने हेतु अपील की एवं हिन्दी हमारी भाषा है और इसमें कार्य करना बहुत आसान है, को दोहराते हुए अपना वक्तव्य समाप्त किया.

'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति संचालन संबंधी आवश्यक दिशानिर्देश'

अकोला क्षेत्र की राजभाषा अधिकारी सुश्री आरती मेतकर ने उपरोक्त विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन, समिति का उद्देश्य, समिति का समन्वयन कार्यालय, समिति के अध्यक्ष और सचिव तथा समिति का संचालन किस प्रकार होता है. साथ-साथ नराकास द्वारा दिए जा रहे उत्कृष्ट कार्यान्वयन पुरस्कार शील्ड के मानक बिन्दुओं पर विशेष रूप से प्रकाश डाला, जिसमें सदस्य कार्यालय द्वारा पुरस्कार प्राप्ति हेतु मुख्य बिंदु - हिंदी दिवस समारोह का आयोजन करना, हिंदी कार्यशाला प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन जहां पर क्षेत्रीय कार्यालय है वहां पर करना आवश्यक होता है, नराकास के बैनर तले अंतर-बैंकिंग प्रतियोगितायों का आयोजन करना, नराकास का अंशदान प्रेषण साथ ही कम्प्यूटरों पर हिंदी में कार्य करने की सुविधा शाखा कार्यालय में भी उपलब्ध कराना इन सभी बिन्दुओं का पूर्ण रूप से पालन करते हैं तो किसी भी शाखा कार्यालय या क्षेत्रीय कार्यालय को पुरस्कार जरूर मिलता है.

सुश्री मेतकर ने बताया कि पुरस्कार प्राप्ति हेतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिंदु 'नराकास के बैठकों में कार्यालय प्रमुख की उपस्थिति' होती है जिस पर सभी को अनुपालन किया जाना चाहिए. अंत में सहभागियों को पुरस्कार प्राप्ति हेतु शुभकामनाएं देकर सुश्री मेतकर ने अपना वक्तव्य पूर्ण किया.

'राजभाषा कार्यान्वयन में सामान्य कठिनाईयां':-

क्षेत्रीय कार्यालय पुणे की राजभाषा अधिकारी सुश्री वृषाली देवरे के अनुसार राजभाषा कार्यान्वयन में सामान्यतः जो कठिनाइयाँ आती है उस पर अगर बोला जाए तो वह नकारात्मक विषय होगा क्योंकि इन कठिनाइयों को पार कर सभी से राजभाषा में कार्य करवाना ही हमारा दायित्व है.

इस विषय में देखा जाए तो, हिन्दी में कार्य न करने के दो विशेष कारण दिखाई देते है. एक तो उत्साह की कमी और दूसरा अंग्रेजी का बहुत ज्यादा प्रभाव. आदत से मजबूर होने के कारण अंग्रेजी में काम करना सभी को आसान लगता है. इसलिए मेरे ग्यारह साल के अनुभव से मैंने सभी को हिन्दी में कार्य करने हेतु किस तरह से प्रेरित किया यह बताना चाहुंगी. हिन्दी में कार्य करने के लिए मोटिवेशन बहुत जरूरी है. सभी का एक समान मोटिव रहता है और वह है एक तो आर्थिक फायदा हो और दूसरा कुछ इनाम मिले या अपना नाम हो. इसलिए स्टाफ सदस्यों को मैंने अपनी बैंक की पत्रिका में लेख लिखने हेतु प्रेरित किया. उनके लेख, कविता छपवाए. उनको उसमें मदद की. उनको विविध प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु प्रेरित किया. निबंध प्रतियोगिता, टोलिक द्वारा आयोजित विविध प्रतियोगिताएं. उसमें स्टाफ सदस्यों को पुरस्कार मिले तो वह प्रेरित हो गए. हर एक स्टाफ सदस्यों से वैयक्तिक रूप से बात कर उन्हें हिन्दी के प्रति प्रेरित किया. राजभाषा के कार्यान्वयन में ऋण तथा विधि विभाग में कार्य करना थोड़ा मुश्किल है. क्योंकि इन विषय के शब्द थोड़े क्लिष्ट है. लेकिन इन विषयों की ग्लोसरी / डिक्शनरी आदि से यह आसान हो जाएगा.

"जो लोग सफर की शुरुआत करते हैं वही तो मंजिल को पर करते हैं,
बस एक बार चलने का हौसला रखिये, फिर तो रास्ते भी आपका इंतजार करते है. "

'भाषा एवं साहित्य का संबंध'

क्षेत्रीय कार्यालय पुणे वरिष्ठ प्रबंधक-राजभाषा श्री चंद्रकांत जैन ने उक्त विषय पर आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा और साहित्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. भाषा है तो साहित्य है और जब साहित्य होता है तब भाषा स्वतः ही विकासमान होती है. वर्तमान में हिन्दी भाषा दुनिया भर में अपनी पहचान बना चुकी है. इस विकास का एकमात्र आधार है समन्वय. हिन्दी भाषा ने न केवल भारत की अपितु विश्व की अनेक भाषाओं के शब्दों से अपने आपको परिपूर्ण किया और आज भी अनेक शब्दों को अपने अंदर समाहित कर रही है. यदि हम हिन्दी भाषा और साहित्य के इतिहास पर दृष्टि डालें तो अनेक पहलू निकलकर आएँगे.

राष्ट्र अपने को समृद्ध और शक्तिशाली सिद्ध करने के नाना विध्वंसकारी और विनाशकारी वैज्ञानित प्रयोग करने में व्यक्त है और परिणामत: वह ऐसे ही साहित्य की रचना कर प्रचार कार्य करता है. यह निर्विवाद सत्य है कि इस प्रकार की स्थितियां और इसमें भाषा और साहित्य का दुरूपयोग संसार को विकास के स्थान पर विनाश की ओर ले जा रहा है. संसार के आज के अग्रणी देशों का मानवीय दायित्वों का समझ कर इन गलतियों से परावृत्त होकर प्रकृति और ईश्वर द्वारा निर्मित इस श्रेष्ठ संसार और मानव रक्षा के लिए अपनी भाषाओं में शांतिप्रद उत्कृष्ट साहित्य की रचना कर उसका उत्तम प्रयोग और प्रचार करना चाहिए.

सामान्य परिचर्चा :-

सामान्य परिचर्चा में सभी राजभाषा अधिकारियों द्वारा अपने अपने अनुभव एवं समस्याएं साझा की गयी. इस परिचर्चा में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का जहां समाधान भी हुआ तो कई नयी समस्याओं के बारे में भी जानकारी मिली. सभी समस्याओं के समाधानों पर भी वृहद चर्चाएं हुई एवं राजभाषा प्रभारी श्री राजीव वार्ष्णेय जी के नेतृत्व में सभी कठिनाइयों का हल भी सुझाया गया.

'केन्द्रीय कार्यालय मार्गदर्शन एवं अपेक्षाएं'

केन्द्रीय कार्यालय, राजभाषा विभाग के प्रभारी एवं सहायक महाप्रबंधक श्री राजीव वार्ष्णेय ने **कार्यालयों में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन** पर विस्तार से बताते हुए उनके निराकरण एवं समाधान के उपाय बताए. श्री वार्ष्णेय जी ने सबसे अधिक जोर हमारी मानसिकता पर दिया जिसे हम आज भी बदल नहीं पाए हैं, जो राजभाषा के कार्यान्वयन में सबसे बड़ी समस्या है. हमारी मानसिकता आज भी अंग्रेजी जानने वालों को सम्मान की दृष्टि से देखना है, जिसे हमें बदलना ही होगा. यद्यपि हिन्दी आज पूरे विश्व में छायी है एवं दिनप्रतिदिन इसके बोलने, समझने एवं लिखने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है. हम कुछ आदतन भी अंग्रेजी लिखने में आसानी महसूस करते हैं. इस प्रकार की कई समस्याओं के बारे में श्री वार्ष्णेय जी ने बताया एवं उन समस्याओं से किस प्रकार बिना किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाए बिना निपटा जा सकता है, इसके बारे में श्री वार्ष्णेय जी ने विस्तार से बताया.

आभार प्रदर्शन

आंचलिक कार्यालय के मानव संसाधन विकास विभाग की मुख्य प्रबंधक सुश्री अर्चना वाल्दे ने कार्यक्रम की समाप्ति पर समस्त अतिथियों को धन्यवाद दिया एवं सभी राजभाषा अधिकारियों को भी कार्यक्रम को सफल बनाने में उनकी सहभागिता को अंकित करते हुए उन्हें भी धन्यवाद ज्ञापित कर पुणे अंचल द्वारा आयोजित "**अखिल भारतीय राजभाषा ई-सम्मेलन**" की समाप्ति की घोषणा की.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

बैंकों में बढ़ता एनपीए - कारण एवं निवारण

भारतीय अर्थ व्यवस्था की रीढ़ बने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक इन दिनों गैर निष्पादित संपत्तियों यानी एनपीए की समस्या झेल रहे है. एनपीए एक ऐसा मुद्दा है जिसे बार-बार उठाया जाता रहा है और बैंकों के लिए सिर दर्द बना हुआ है और इसके बारे में हर बार जब भी अर्थव्यवस्था की बात होती है तो कुछ न कुछ ठोस कदम उठाने की बात होती है तो आइये जानते है की यह एनपीए क्या है ? क्या है इसके कारण ? और कैसे करे इसका निवारण ?

असल में एनपीए को नॉन परफोरमिंग असेट या अनर्जक अस्ति भी कहा जाता है और अगर साधारण भाषा में बात करें तो यह ऐसी संपत्ति होती है जिसका देश की अर्थव्यवस्था में कोई योगदान नहीं होता है. अनर्जक अस्ति में से तात्पर्य बैंकिंग व वित्त उद्योग में ऐसे ऋण से है, जिसका लौटना संदिग्ध हो.

बैंक अपने ग्राहकों को जो ऋण प्रदान करता है, उसे अपने खाते में अस्ति के रूप में दर्शाता है. यदि किसी कारण वश यह आशंका हो कि ग्राहक यह ऋण लौटा नहीं पाएगा तो ऐसे ऋण को अनर्जक अस्ति कहा जाता है. किसी भी बैंक के सेहत (आर्थिक सेहत) को मापने के लिए यह एक महत्वपूर्ण पैमाना है तथा इसमें वृद्धि होना किसी बैंक कि सेहत के लिए चिंता का विषय ही होता है.

संपत्ति कि गुणवत्ता के मुताबिक एनपीए को तीन भागों में विभाजित किया गया है. मसलन,

1. मानक पर खरी न उतरनेवाली अस्तियां
2. संदिग्ध आस्तियां और
3. डूब जानेवाली अस्तियां (लॉस)
4. कोई खाता एनपीए न हो, इसके लिए बैंकों में स्पेशल मेंशन अकाउंट (एसएमए) का प्रावधान किया गया है. ताकि समयानुसार सतर्कता बरती जाए व संभावित एनपीए खातो को एनपीए में तब्दील होने से बचाया जा सके.

यह सच तो सबको पता है जिसपर सार्वजनिक रूप से मुश्किल ही बात होती है. वह यह कि भारतीय वित्तीय तंत्र बैंकों पर आश्रित है. वह यह कि भारतीय बैंकों, विशेष रूप से यह सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) द्वारा संचालित होती है. दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि आर्थिक चिंतक और नीति निर्धारक इन पीएसबीको भारतीय अर्थव्यवस्था की अमूल्य निधि मानने के बजाय एक समस्या के तौर पर देखते है. इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि भारत में बैंकिंग का मतलब व अधिकांशतः पीएसबी से ही होता है. दुखद है की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के केंद्र में होने के बावजूद पीएसबी का महत्व निरंतर कम करके आंका जा रहा है. इसका मज़ाक उड़ाया जाता है और आर्थिक चर्चा के दौरान भी इन्हें कमतर दिखाया जाता है. उनकी विफलताओंकों बढ़ा-चढाकर दिखाया जाता है. जब कि विशेषताओं को दबा दिया जाता है.

गौर करनेवाली बात है कि सरकार बैंकों में ज्यादा एनपीए होने का मूल कारण बड़ी परियोजनाओं व सरकारद्वारा प्रायोजित विभिन्न योजनाओं की सफलताको सुनिश्चित करने के लिए दिया गया ऋण है. सरकारी बैंकों में अक्सर राजनीतिक हस्तक्षेप के मामले देखे जाते है. जबकि निजी बैंक इस तरह के तामझाम व दबाव से मुक्त रहते है. एनपीए केवल बैंकों के लिए नहीं, समूची अर्थव्यवस्था के लिए नुकसानदेय है.

बहरहाल, आज कि तारीख में विमान, कोयला, बिजली, सड़क, दूरसंचार आदि क्षेत्रों में बैंकों के कॉर्पोरेट ऋण फसे है. ऋण-माफी के बाद कृषि क्षेत्र में भी एनपीए कि स्थिति गंभीर हुई है. आज भी किसान को जो अंशतः ऋण माफी मिली है उसमें भी वह पूर्ण ऋण माफी की मांग कर रहा है. और यह खतम होते ही अगली ऋण-माफी का इंतजार करेंगे. ऋण-माफी सामाजिक तौर पे अपनी अर्थव्यवस्था पे एक बड़ा आघात है, जो लोगों की मानसिकताओं को पूर्ण बदल दे रहा है.

बैंकों के लिए एनपीए को साधारण तरीके से हम ऐसा कह सकते है की कोई ऋण लेता है और किसी भी कारण से उसे वसूल पाने में अक्षम होता है तो वह एक अनर्जक अस्ति बन जाता है क्यों कि उन्हें रिकवर करने की संभावना कम होती है. यह ऋण एनपीए होने की संभावना निम्न वजहों से हो सकती है.

- बैंक की ऋण देने की प्रक्रिया में खामी होना.
- कोई बैंकिंग आपदा
- जिस बिजनेस / कंपनी / इन्सान आदि का ऋण हो और उसका दिवालिया होना.
- हैसियत होने पर भी ऋण का बकाया नहीं भरना.
- बाजार का गिर जाना
- कमजोर जांच एवं निरंतरता निरीक्षण
- कमजोर कानूनी ढाचा
- ऋण के पैसो का दिक्परिवर्तन
- और के पैसो का दिक्परिवर्तन
- और अन्य

इन सब के प्रभाव सभी लोगों और देश की अर्थव्यवस्था में पड़ता है क्योंकि अगर एनपीए बढ़ जाता है तो इस से बैंकों कि आर्थिक सेहत पर आघात है, बैंकों के मुनाफे पर सबसे ज्यादा असर होता है, साथ में ही शेयर होल्डर्स को नुकसान होता है एवं देश की अर्थव्यवस्था बिगड़ जाती है.

ऐसा नहीं की ऋण वसूली के लिए कोई मापदंड नहीं, पर उसका अनुपालन ठीक ढंग से नहीं हो पाता. एनपीए को नियंत्रण में रखने के लिए हर देश के नियामक मापदंड निर्धारित करते है. जिनका अनुपालन वित्तीय संस्थाओं के लिए आवश्यक होता है.

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

2008 के वैश्विक आर्थिक संकट के बाद अनर्जक अस्तियों को शीघ्र चिन्हित करने व खातों में सही तरीके व ईमानदारी से दर्शाने पर ज़ोर दिया गया है, जिनके तहत बैंकों में वसूली के लिए प्रत्येक कार्यालय में ऋण वसूली ट्रिब्युनल में नोडल अधिकारियों की नियुक्ति.

- बैंकों के द्वारा परिसंपत्तियों की वसूली पर ज़ोर और परिसंपत्ति पुनर्गठन कंपनिया

  संकल्प एजेंटों की नियुक्ति

- राज्य स्तर के बैंकरों की समितियोंको राज्य सरकारों के साथ होनेवाले मामले सुलझाने के लिए सक्रिय होने के निर्देश देना.

- बैंकों में जानकारी साझा करने के आधार पर नए ऋण स्वीकृत करना.

- लोक अदालत तहत संदिग्ध अस्तियां एवं डूब जानेवाली अस्तियां समझोंतों से हासिल की जा सकती है. यह एक तुरंत ऋण राशि को वसूल करने का मार्ग है.

- डैब्ट रिकवरी ट्रिब्युनल एवं सरफेसी कलम 2002 भी ऐसे मार्ग है जिसके तहत बैंक अपना डुबा हुआ पैसा हासिल कर सकती है.

- असेट रिकवरी कन्स्ट्रकशन कंपनिया भी ऋण वसूली के लिए एक अच्छा विकल्प है.

- और सबसे महत्वपूर्ण की ऋण डुबानेवालों से शाखा के अधिकारियों का नियमित संबंध, जो उनको एनपीए से उनको होनेवाले वैयक्तिक नुकसान के बारे में बताए, ताकि शीघ्र गति से बकाया पा सके.

बैंकों का मानना है की एनपीए कैंसर के समान है लेकिन लाइलाज नहीं. बैंकों के लिए एनपीए जरूर बड़ा मर्ज बन गया है, लेकिन अब सरकारी बैंक इसे छुपाने के मूड में नहीं है. वे इसका इलाज करने के लिए तैयार है. अगर इस राशि की वसूली की जाती है तो सरकारी बैंकों की लाभप्रदता में इजाफा, लाखो लोगों को रोजगार, नीतिगत दर में कटौती का लाभ, आधारभूत संरचना का निर्माण, कृषि की बेहतरी, अर्थव्यवस्था को मजबूती, विकास को गति आदि मुमकिन हो सकेगा. पड़ताल में साफ है कि एनपीए को कम करने का उपाय उसके मर्ज में छुपे है. बैंक में व्याप्त अंदरूनी तथा दूसरी खामियों का इलाज, बैंक के कार्यकलापों में बेवजह दखलअंदाजी पर रोक, मानव संसाधन में बढ़ोतरी आदि की मदद से बढ़ते एनपीए पर निश्चित रूप से काबू पाया जा सकता है.

इसीलिए,

" आज से हमारा एकही नारा, वसूली पे रहेगा ध्यान हमारा...
एनपीए के इस कैंसर को,जड़ों से उखाड़ेंगे सारा.
तो आओ चलो पण करे, बैंक को अपने एनपीए से मुक्त करे...
मुनाफे में लाके बढ़ोतरी, जीवन अपना आनंद से भरे.

*हिन्दी वर्णमाला का क्रम से कवितामय प्रयोग.

अ चानक,
आ कर मुझसे,
इ ठलाता हुआ पंछी बोला.

ई श्वर ने मानव को तो-
उ त्तम ज्ञान-दान से तौला.

ऊ पर हो तुम सब जीवों में-
ऋ ष्य तुल्य अनमोल,
ए क अकेली जात अनोखी.

ऐ सी क्या मजबूरी तुमको-
ओ ट रहे होंठों की शोख़ी!

औ र सताकर कमज़ोरों को,
अं ग तुम्हारा खिल जाता है;
अ: तुम्हें क्या मिल जाता है?

क हा मैंने- कि कहो,
ख ग आज सम्पूर्ण,
ग र्व से कि- हर अभाव में भी,
घ र तुम्हारा बड़े मजे से,
च ल रहा है.

छो टी सी- टहनी के सिरे की
ज गह में, बिना किसी
झ गड़े के, ना ही किसी-
ट कराव के पूरा कुनबा पल रहा है.

ठौ र यहीं है उसमें,
डा ली-डाली, पत्ते-पत्ते;
ढ लता सूरज-
त रावट देता है. *थ* कावट सारी, पूरे
दि वस की-तारों की लड़ियों से
ध न-धान्य की लिखावट लेता है.

ना दान-नियति से अनजान अरे,
प्र गतिशील मानव,
फ़ रेब के पुतलो,
ब न बैठे हो समर्थ.
भ ला याद कहाँ तुम्हे,
म नुष्यता का अर्थ?

य ह जो थी, प्रभु की,
र चना अनुपम.....

ला लच-लोभ के
व शिभूत होकर,
श र्म-धर्म सब तजकर.
ष ड्यंत्रों के खेतों में,
स दा पाप-बीजों को बोकर.

हो कर स्वयं से दूर-
क्ष णभंगुर सुख में अटक चुके हो.
त्रा स को आमंत्रित करते-
ज्ञा न-पथ से भटक चुके हो.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

राजभाषा संबंधी गतिविधियां

दिनांक 22.02.2021 को आंचलिक कार्यालय पुणे में राजभाषा पुरस्कारों तथा हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई. प्रदर्शनी का उदघाटन फील्ड महाप्रबंधक श्री के सत्यनारायाणन जी द्वारा किया गया.

इस मौके पर कार्यालय की गृह पत्रिका सेंट-सह्याद्री के दिसंबर 2020 का विमोचन भी किया गया. अन्य कार्यपालकों में क्षेत्रीय प्रबंधक श्री विलास देशमुख, सहायक महाप्रबंधक श्री सुरेश सैलियन, श्री मनोज कुमार सिंह, श्री वेंकटेशन तथा श्री स्वदेश चंद्र की उपस्थिति उल्लेखनीय रही.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

पुणे अंचल की तिमाही गृहपत्रिका - अंक मार्च 2021
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के कार्यालयों, शाखाओं एवं स्टॉफ सदस्यों के बीच केवल निजी वितरण हेतु